वर्ष 25 । अंक 7 । फरवरी, 2024
ISSN No. 2582-4546
₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

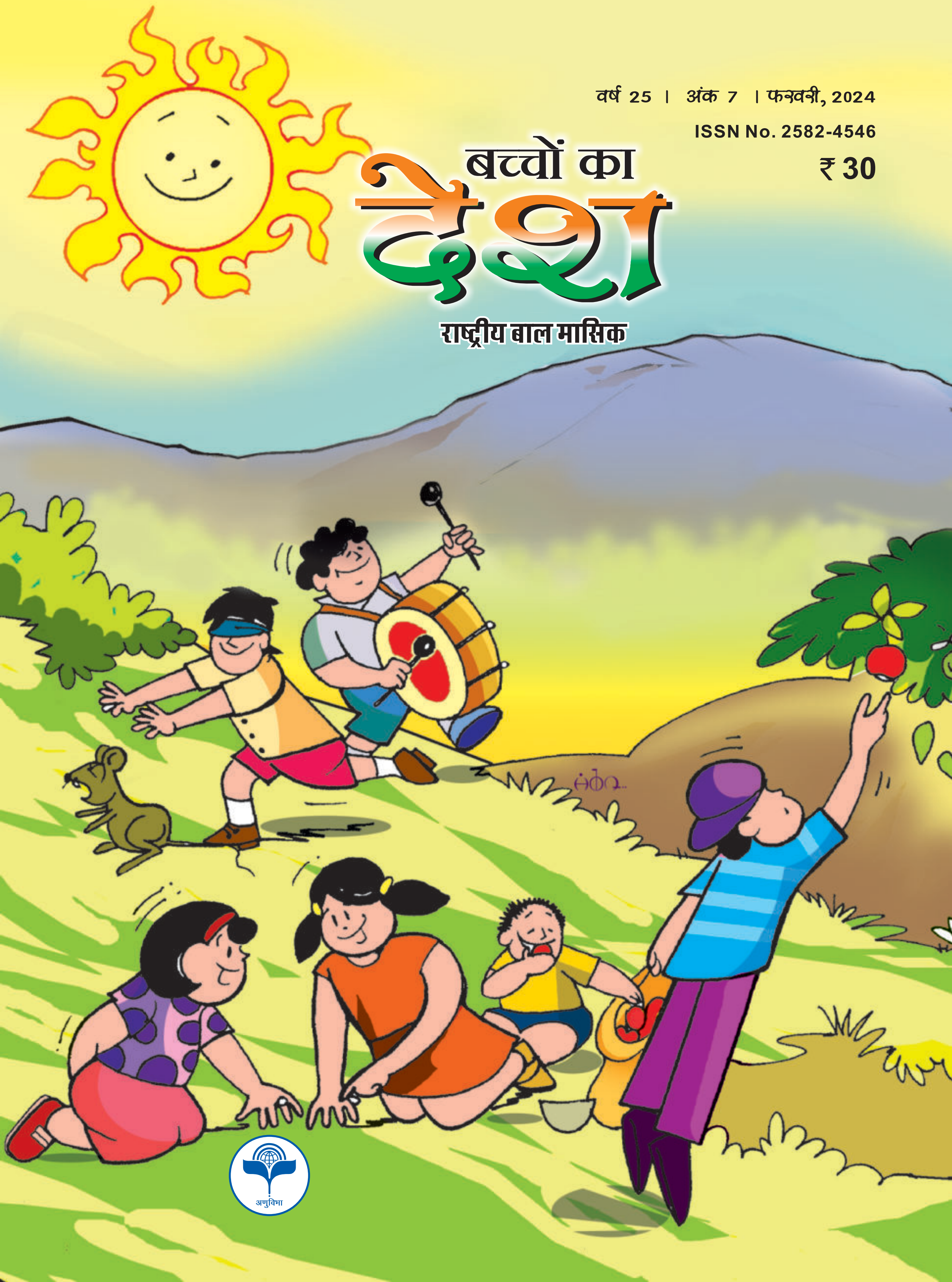

क्या आप जानते हो ?

फरवरी खास क्यों?

दुनिया में सबसे प्रचलित कैलेंडर है ग्रेगोरियन कैलेंडर जिसे हम अँग्रेजी कैलेंडर भी कहते हैं। यह कैलेंडर पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के आधार पर बनाया गया था। सूर्य की एक परिक्रमा करने में पृथ्वी को जितना समय लगता है उसे इस कैलेंडर में जनवरी से दिसम्बर तक 12 महीनों में बाँटा गया है।

बच्चो, क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि पूरे वर्ष में अर्थात सभी 12 महीनों में फरवरी महीना सबसे छोटा होता है। यही एक महीना है जिसके दिन एक समान नहीं होते, कभी 28 दिन तो कभी 29 दिन का होता है यह महीना।

पृथ्वी को सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन और लगभग 6 घंटे का समय लगता है। ऐसे में हर साल 6 घंटे अतिरिक्त बच जाते हैं जो 4 साल बाद 24 घंटे यानी एक दिन हो जाता है। इसीलिए फरवरी के महीने में हर चार साल में एक दिन जोड़ते हैं और फरवरी महीना 29 दिन का हो जाता है। इसी को लीप ईयर कहते हैं।

लीप वर्ष इसलिए होता है क्योंकि किसी ग्रह की सूर्य के चारों ओर कक्षा में परिक्रमा (वर्ष) और उसकी स्वयं की धुरी पर घूर्णन (दिन) पूरी तरह से एक रेखा में नहीं होते हैं। यह हमारे सौर मंडल के लगभग हर दूसरे ग्रह के लिए सच है। उदाहरण के लिए, मंगल ग्रह पर एक वर्ष 668 'मंगल ग्रह दिनों' जिन्हें सोल कहा जाता है, का होता है। मंगल को सूर्य के चारों ओर एक चक्कर लगाने में 668.6 सोल लगते हैं। इसलिए 10 वर्ष की अवधि में चार वर्ष 668 सोल के होंगे और छह वर्ष 669 सोल के साथ लीप वर्ष होंगे।

प्यारे बच्चो,
'बच्चों का देश' पत्रिका आपकी सफलता की साथी है।
25 वर्षों से यह पत्रिका हर महीने आपसे मिलने आपके घर आती है।
आपके लिए लाती है ढेरों कहानियाँ, कविताएँ और जानकारियाँ।
आशा है आप इसे मन लगा कर पढ़ते हैं और
जो बात अच्छी लगे उसे जीवन में भी उतारते हैं।

आपके चिन्तन के लिए और
दूसरों के साथ चर्चा के लिए प्रस्तुत है

इस माह का विचार -

मैं
सुनता हूँ तो भूल जाता हूँ!
देखता हूँ तो याद रखता हूँ!
करता हूँ तो समझ जाता हूँ!

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 25 अंक : 7 फरवरी, 2024

सम्पादक : संचय जैन
सह सम्पादक : प्रकाश तातेड़
कार्यालय प्रभारी : चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक्स : गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन : सुशील कुमार, दिलीप शर्मा

अध्यक्ष : अविनाश नाहर
महामन्त्री : भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया
प्रबन्ध सम्पादक : निर्मल राँका, पंचशील जैन
प्रकाशन मन्त्री : देवेन्द्र डागलिया
पत्रिका प्रसार संयोजक : सुरेन्द्र नाहटा

प्रकाशक :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
www.anuvibha.org
9414343100, 9351552651

सहयोगी संस्थान :
भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर

- 'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है।
- लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है।
- समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित।

कविता

08 **दादाजी कहते हैं**
अनीता गंगाधर शर्मा

10 **खिले फूल हैं**
रमेशचंद्र पंत

10 **तितलियो, जल्दी उड़ो!**
डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

18 **चिड़िया आई**
वीनू शर्मा

18 **भुनी करारी मूँगफली**
संतोष कुमार सिंह

30 **ठंड बहुत है**
चक्रधर शुक्ल

40 **चलते रहना अविराम**
सत्यशील राम त्रिपाठी

नया आकर्षण
पढ़ो और जीतो
देखें पृष्ठ 41 पर

आलेख

08 राज्य पक्षी–9 : कृष्ण कलगी बुलबुल
डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
11 स्वामी श्रद्धानन्द
राकेश चक्र
26 आओ जानें हमारा लोकतन्त्र– 2
संचय जैन
28 बसन्त ऋतु का पक्षी : छोटा बसंता
शिवचरण चौहान
34 मेरा देश : गाँव विशेष–14
शिखर चन्द जैन
38 विश्व विरासत स्थल–5
नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
47 एक रुपया
विमला रस्तोगी 'आयाम'

कहानी

09 पकड़ ली बेल्ट
रजनीकान्त शुक्ल
15 पढ़ाई का उजाला
विजय आनदेव
19 गुरुभक्त धनुर्धर एकलव्य
डॉ. संगीता बलवंत
23 नीबू का पेड़
गिरिजा कुलश्रेष्ठ
31 डोसा ने बदली आदत
डॉ. विमला भंडारी
35 साँपों का शाप
सीताराम गुप्ता
39 हमारा गौरव
गोविन्द शर्मा

स्तम्भ

06 सम्पादक की पाती
07 महाप्रज्ञ की कथाएँ
13 सुडोकू
40 आओ पढ़ें : नई किताबें
29 दस सवाल : दस जवाब,
जरा हँस लो
30 प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये
33 व्हाट्सएप कहानी
41 पढ़ो और जीतो, उत्तरमाला
42 कलम और कूँची
44 नन्हा अखबार
46 Science of Living : Jeevan Vigyan
49 जन्मदिन की बधाई

विविधा

12 अंकों की चित्र पहेली
चाँद मोहम्मद घोसी
14 विस्मयकारी भारत–14
रवि लायटू
17 वर्ग पहेली
राधा पालीवाल
22 अणुव्रत की बात
मनोज त्रिवेदी
36 दिमागी कसरत
प्रकाश तातेड़
37 बूझो तो जानें
भानु प्रताप सिंह
49 किड्स कॉर्नर
राकेश शर्मा 'राजदीप'

चित्रकथा एवं आवरण
संकेत गोस्वामी

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

इन दिनों सौरभ दो महीने बाद आने वाली परीक्षाओं के बारे में सोचने लगा था। वैसे तो सौरभ नियमित पढ़ाई करने वाला बच्चा है। पढ़ने के लिए उसने रोज का समय निर्धारित कर रखा है। इस नियम का फायदा भी है – घर में कोई उसे पढ़ने लिए टोका–टाकी नहीं करता और परीक्षा के बारे में वह ज्यादा तनाव भी नहीं पालता है।

पिछले कुछ दिनों से वह परेशान–सा रहने लगा था। पढ़ने या कोई और काम करने में उसका मन भी कम लग रहा था। उसे गुस्सा भी ज्यादा आने लगा था जिसे वह अपनी छोटी बहिन रितु पर उतारता था। वह सोच रहा था कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? क्या कारण हो सकता है? तभी उसे ख्याल आया कि कुछ दिनों से घर का माहौल तनावपूर्ण–सा है। घर में या तो शान्ति पसरी रहती है या किसी बात को लेकर गर्मागर्म कहासुनी शुरू हो जाती है। सौरभ को ये दोनों ही स्थितियाँ अखरती थी।

आज तो हद ही हो गई थी। किसी बात को लेकर माँ पर दादीमाँ गजब गुस्सा हो गई। माँ भी कुछ भी कहे जा रही थी। दोनों को इतने गुस्से में सौरभ ने कभी नहीं देखा था। सौरभ कुछ देर सोचता रहा फिर उठा, कमरे से बाहर गया और दोनों के बीच जाकर खड़ा हो गया। कुछ क्षणों के लिए वहाँ सन्नाटा पसरा रहा। तभी उसने माँ का हाथ मजबूती से पकड़ा और खींच कर अपने कमरे में ले आया।

सौरभ के मन में जो कुछ था, आँसुओं से गीली आँखें सब कह रही थीं। माँ कमरे से बाहर गई और दादीमाँ से अपने कटु व्यवहार के लिए पैर छू कर क्षमा माँग ली। फिर तो सौरभ ने अपने मन की सारी बात माँ को बता दी थी कि कैसे वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहा है और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा–सा होता जा रहा है। माँ खुद भी यह अनुभव कर ही रही थी।

रात को घर के सभी सदस्य खाने पर एक साथ बैठे थे। माँ ने कहा – ''पिछले कुछ दिनों से घर में जो माहौल है, बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। मैं अपनी गलतियों के लिए माफी माँगती हूँ।''

कुछ क्षणों की खामोशी के बाद दादीमाँ बोली – ''तुम क्यों माफी माँगती हो बहू, सबसे ज्यादा तो मैं चिल्लाती हूँ! जब शुरू होती हूँ तो मुझे कुछ पता नहीं चलता।''

पापा को लगा कि अब उन्हें भी कुछ बोलना चाहिये – ''अरे माँ, तुम बड़ी हो और हम छोटे। अब से हम लोग भी ध्यान रखेंगे कि छोटी–छोटी बातें बड़ी न बनें।''

सौरभ क्या बोलता! वो तो बस सुन रहा था और मन ही मन खुश हो रहा था। उसकी एक छोटी–सी पहल ने घर का माहौल बदल दिया था। तभी रितु धीरे से बोली – ''भैया, अब तुम भी मुझ पर गुस्सा नहीं करोगे ना!'' ''अरे पगली नहीं!'' – कह कर सौरभ ने रितु को गले से लगा लिया।

बच्चो, सौरभ यदि मन ही मन कुढ़ता रहता तो उसकी पढ़ाई खराब होती रहती, उसका स्वभाव भी बिगड़ जाता और परिवार की शान्ति भी भंग होती रहती। हर समस्या का समाधान है, बस सच्चे दिल से कोशिश करनी होती है। आपके सुखी व शान्त जीवन के लिए दिल से मंगलकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

प्रभु का संदेश

एक भाई ने आचार्य भिक्षु से पूछा– ''आप जब आते हैं तब लोगों में हर्ष की लहर दौड़ जाती है। लोगों में उत्साह जाग जाता है। उनमें नयी चेतना का जागरण होता है। यह क्यों?''

आचार्य भिक्षु बोले– ''एक महिला को बहुत वर्षों से पीहर का कोई समाचार नहीं मिल रहा था। वह अधीर हो गई। प्रतीक्षा की घड़ियाँ बहुत लम्बी हो गयीं। एक दिन अचानक एक आदमी आकर बोला– सेठानी, मैं तुम्हारे पीहर का सन्देश लेकर आया हूँ। यह सुनते ही महिला पुलकित हो गयी। उसने उस आदमी का बहुत आतिथ्य–सत्कार किया। अच्छा भोजन खिलाया। उसके हर्ष का एकमात्र कारण था– पीहर का सन्देश।

आचार्य भिक्षु ने आगे कहा– ''हम जहाँ भी जाते हैं, प्रभु का सन्देश देते हैं। लोगों के मन में बड़ी तड़प है प्रभु से मिलने की। प्रभु आए या न आए, प्रभु का सन्देश सुनकर लोग हर्ष से झूम उठते हैं। वे मानते हैं कि प्रभु से मिलने की बात तो दूर है, यदि प्रभु का सन्देश भी प्राप्त हो जाता है तो बड़ी बात होती है।''

कथाबोध : जिसकी हमें चाहत होती है, उसका आगमन मात्र हमें प्रसन्न कर देता है।

अणुविभा

अणुव्रत

संपादकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन
210, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
91166 34512
delhi@anuvibha.org

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

संपादकीय कार्यालय
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बाक्स नं. 28,
राजसमन्द–313324 राजस्थान
91166 34515
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in

सदस्यता फॉर्म

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूँ–

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 750	₹ 350
3 वर्ष	₹ 1800	₹ 900
5 वर्ष	₹ 3000	₹ 1500
10 वर्ष	₹ 6000	₹ 3000
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 15000	₹ 7500

'अणुव्रत पत्रिका' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
CANARA BANK
DDU MARG, NEW DELHI
A/c No.: 0158101120312
IFSC Code : CNRB0000158

'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

कृपया मुझे इस पते पर पत्रिका भिजवाएं –

नाम :

पता :

पिन

मोबाईल ईमेल

यह फॉर्म मय सदस्यता शुल्क इस पते पर भेजें –
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002 मोबाइल : 9116634512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

सदस्यता शुल्क ₹.............नकद/नेट बैंकिंग/चैक.................... से प्राप्त हुए।
प्राप्तकर्ता का नाम.................... हस्ताक्षर प्राप्तकर्ता....................

हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक ....

राज्य पक्षी-9

हिन्दी नाम - कृष्ण कलगी बुलबुल
अँग्रेजी नाम - Flame & throated Bulbul
वैज्ञानिक नाम - Pycnonotus gularis
फोटो - आनन्द गुप्ता

गोवा का राज्य पक्षी

कृष्ण कलगी बुलबुल

केवल भारत में पाई जाने वाली यह बुलबुल दक्षिण–पश्चिम भारतीय मैदानों और पर्वतीय इलाकों में रहती है। इसे काली कलगी वाली बुलबुल कहते अवश्य हैं लेकिन इसके सिर पर कलगी नहीं होती। गोवा से कन्याकुमारी तक रहने वाली यह बुलबुल घने जंगलों और झाड़ियों वाले भागों में रहना पसन्द करती है।

यह मध्यम आकार की छोटी बुलबुल है जिसकी लम्बाई करीब 18 सेन्टीमीटर होती है। इसका सिर काला तथा शरीर का शेष भाग हरापन लिए हुए पीला होता है। इसका भोजन फल–फूल, बीज, बेरियाँ, पौधों के कोमल भाग तथा फूलों का रस है। यह छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े भी खाती है। लेकिन यह कीड़े–मकोड़ों की तुलना में फल अधिक खाती है। इसे आमतौर पर पेड़ों की ऊपरी शाखाओं पर बैठकर फल खाते देखा जा सकता है। यह अधिकतर पेड़ों पर ही रहती है लेकिन पानी पीने के लिए जमीन पर भी उतरती है।

डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी
जयपुर (राजस्थान)

पद्य कथा

दादाजी कहते हैं...

रिमोट वाला टीवी मेरा,
मेरे मन को भाता।
बैठ उसी के आगे मैं तो,
खाना अपना खाता।

बटन दबा जब चैनल बदलूँ,
रंग कई ले आता।
नाटक पिक्चर गीत नगाड़े,
सब मुझको दिखलाता।

रोज नए कार्टून दिखाकर,
मन मेरा बहलाता।
मम्मी को भी मेरी वो ही,
सरगम रोज सुनाता।

हर दिन काम सभी अपने मैं,
उसके आगे करता।
चित्र वहीं सब बैठ बनाता,
रंग वहीं पर भरता।

दादी मेरी मुझे टोकती,
मत बैठो तुम आगे।
वरना इन आँखों पर भैया,
चश्मा मोटा लागे।

दादा जी कहते हैं राजा,
पुस्तक सबसे अच्छी,
ज्ञान बढ़ाती हर दिन अपना,
मित्र वही है सच्ची।

अनीता गंगाधर 'शर्मा'
अजमेर (राजस्थान)

पकड़ ली बेल्ट

आंध्रप्रदेश राज्य के गुन्टूर जिले में वेमुरू मण्डल है। इसी के चावली गाँव में गिरजाघर का निर्माण हो रहा था। गाँव के लोग खुश थे कि अब आगे से उन्हें अपनी प्रार्थना करने के लिए कहीं दूर नहीं जाना होगा। हाँ! इससे आसपास के रहने वाले उन बच्चों के लिए थोड़ी परेशानी हो गई जो उस निर्माण कार्य वाली जगह पर खेलते थे।

6 मार्च 2003 का दिन था। सुबह नहा धोकर खाना खाकर बच्चे घरों के बाहर खेलने निकल गए थे। चार साल का चिक्कला नरेन्द्र कुमार और पुलिगुज्जू रामकृष्ण आपस में खेल रहे थे। वे जहाँ खेल रहे थे उधर गिरजाघर के निर्माण की सामग्री बिखरी हुई थी, इसलिए जिधर कुछ खुला स्थान था, वे उस ओर चले गए।

उधर खुला स्थान इसलिए था क्योंकि बोरवेल के लिए गड्ढ़ा खोदा गया था। उसकी गहराई करीब बारह फीट थी। रामकृष्ण और नरेन्द्र पकड़म–पकड़ाई खेल रहे थे। तभी अचानक रामकृष्ण की पकड़ से बचने के लिए नरेन्द्र ऐसा भागा कि असावधानी से उस गड्ढ़े में जा गिरा। रामकृष्ण ने जैसे ही नरेन्द्र को बोरवेल में गिरते हुए देखा वह घबरा गया और मदद के लिए चिल्लाने लगा। उसकी चीख–पुकार सुनकर वहाँ पर जरा–सी देर में लोगों की भीड़ जमा हो गई।

अब वे सारे वहाँ खड़े होकर चिन्ता प्रकट कर रहे थे, खड़े हुए तमाशा देख रहे थे मगर उनमें से कोई ऐसा नहीं था जो नीचे जाकर उस बच्चे को निकालकर बाहर ला सके। तभी वहाँ भीड़ जमा देखकर दौड़ता हुआ थोटाकुरा महेश नाम का एक लड़का आ पहुँचा। उसकी उम्र सिर्फ पन्द्रह साल थी। जब वह वहाँ पहुँचा तो इस बात पर चर्चा चल रही थी कि नीचे नरेन्द्र को लेने कौन जाएगा?

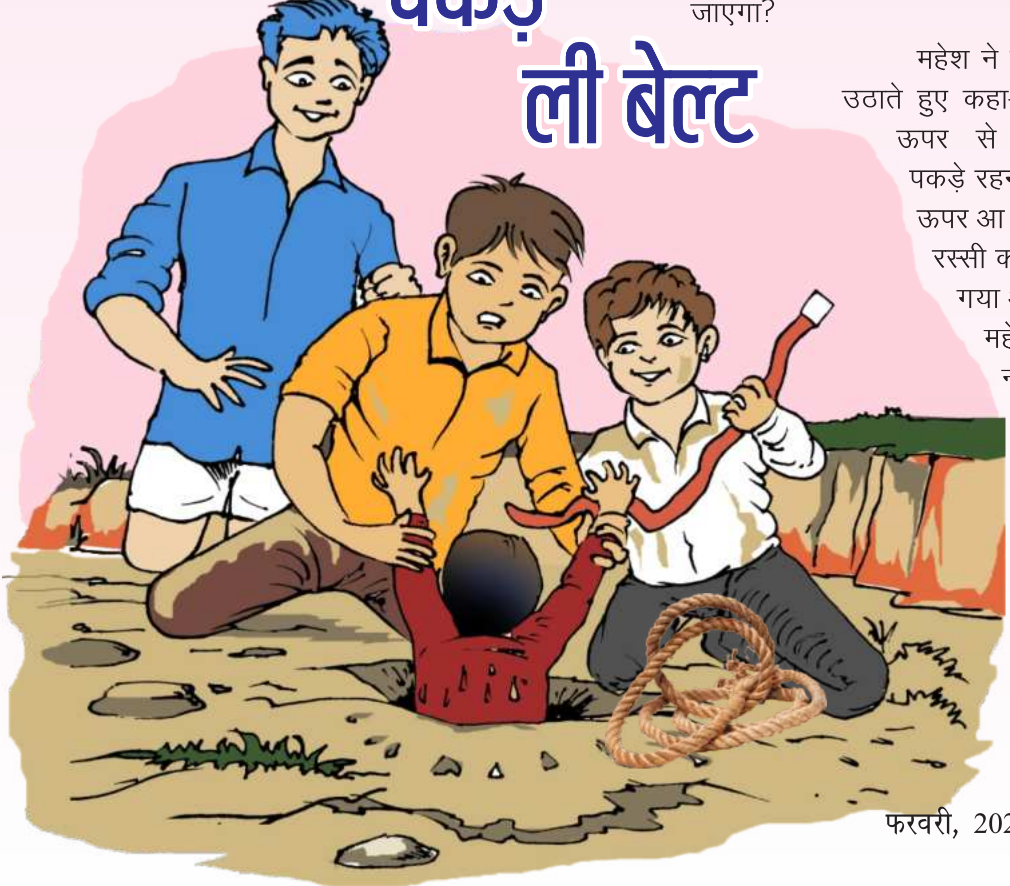

महेश ने तुरन्त हाथ ऊपर उठाते हुए कहा– "मैं जाता हूँ। ऊपर से रस्सी कसकर पकड़े रहना। मैं उसे लेकर ऊपर आ जाऊँगा।" तुरन्त रस्सी का इन्तजाम किया गया और उसके सहारे महेश बोरवेल में नीचे उतर गया। रस्सी छोटी थी। उसने नरेन्द्र को पकड़ने की कोशिश की मगर नरेन्द्र उसकी पहुँच से दूर था।

देखें पृष्ठ 13...

खिले फूल हैं

लो! वसन्त के,
दिन फिर आए।

रंग-बिरंगे
खिले फूल हैं,
भौंरे उन पर
रहे झूल हैं।

सच खुशबू के,
दिन फिर आए।...

कुहू-कुहू की
मची धूम है,
पीली सरसों
रही झूम है।

नव कलियों के,
दिन फिर आए।...

मौसम का यह
नया रूप है,
नहीं ठिठुरती
हुई धूप है।

कुछ ऐसे तो,
दिन फिर आए।...

रमेशचंद्र पंत
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

तितलियो, जल्दी उड़ो!

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'
शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

तितलियो! जल्दी उड़ो,
जल्दी उड़ो।

आ रही है फौज बच्चों की।
जानती हो मौज बच्चों की।
नहीं है उनको जरा भी डर।
पकड़ना चाहे तुम्हारे पर।
भूलकर अब फूल का रस,
तितलियो! जल्दी मुड़ो,
जल्दी मुड़ो।...

अपने पंख यदि बचाना है।
बाग में बेखौफ आना है।
नहीं केवल फूल ही चूमो।
शूल को भी साथ ले घूमो।
वह रक्षा करेगा तुम्हारी,
तितलियो, जल्दी जुड़ो,
जल्दी जुड़ो।...

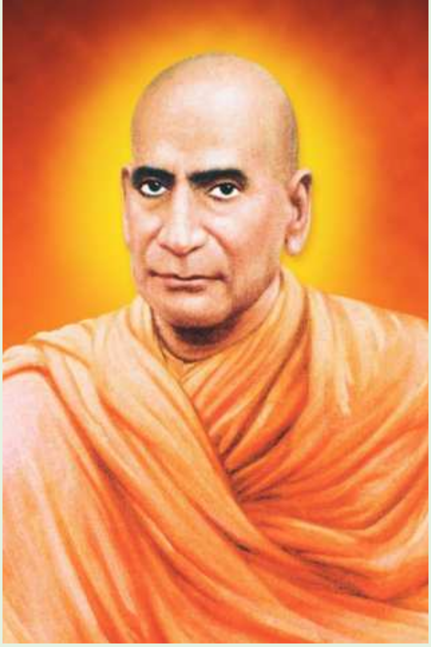

स्वतन्त्रता सेनानी, आर्यसमाजी, देशभक्त

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द भारत के महान समाज सुधारक थे। स्वामी जी ऐसे महान राष्ट्र भक्त संन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश को अँग्रेजों की दासता से छुटकारा दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। इसके अलावा दलितों को उनके अधिकार दिलाने और पश्चिमी शिक्षा की जगह वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रबन्ध करने जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण काम किए।

महान स्वतन्त्रता सेनानी, देशभक्त, स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म 22 फरवरी 1856 को पंजाब प्रान्त के जालंधर जिले के तलवान नामक गाँव में हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द के पिता का नाम लाला नानकचन्द था, जो इस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा शासित उत्तर प्रदेश में पुलिस अधिकारी के पद पर नियुक्त थे। श्रद्धानन्द के बचपन का नाम बृहस्पति था, बाद में उन्हें मुंशीराम नाम से भी पुकारा जाने लगा। मुंशीराम के पिता का तबादला अलग–अलग स्थानों पर होता रहता था, जिस कारण मुंशीराम की आरम्भिक शिक्षा अच्छी प्रकार से नहीं हो सकी। लाहौर और जालंधर उनके मुख्य कार्यस्थल रहे।

स्वामी दयानन्द से प्रेरित

एक बार आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बरेली पहुँचे, तो पुलिस अधिकारी नानकचन्द अपने पुत्र मुंशीराम को साथ लेकर स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनने पहुँचे। युवावस्था तक मुंशीराम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास ही नहीं करते थे, पर स्वामी दयानन्द जी के तर्कों और आशीर्वाद ने मुंशीराम को ईश्वर के प्रति विश्वासी और वैदिक धर्म का बड़ा भक्त बना दिया।

पढ़ाई पूरी करने के बाद मुंशीराम एक सफल वकील बने। अपनी वकालत से उन्होंने काफी नाम और प्रसिद्धि हासिल की। आर्य समाज में वे बहुत ही सक्रिय रहते थे। उनका विवाह शिवा देवी जी के साथ हुआ था। मात्र 35 साल की अवस्था में उनकी पत्नी शिवा देवी स्वर्ग सिधार गईं। उस समय उनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। उसके बाद स्वामी जी ने 1917 में संन्यास धारण कर लिया और फिर वहीं से वे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विश्वविख्यात हुए।

समाज सेवा के विविध कार्य

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती के बताए रास्ते पर चल पड़े। अपनी जीवन गाथा में उन्होंने लिखा था– "मैं अपने विषय में कह सकता हूँ कि आपके सत्संग ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा लाभ प्राप्त करने योग्य बनाया।" स्वामी श्रद्धानन्द अपना आदर्श महर्षि दयानंद को ही मानते थे। उनके महाप्रयाण के बाद उन्होंने स्वदेश, स्व–संस्कृति, स्व–समाज, स्व–भाषा, स्व–शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी

प्रचार, वेदोत्थान, पाखंड खंडन, अंधविश्वास उन्मूलन और धार्मिक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए ठोस कार्य किए।

स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष

स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितों की भलाई के लिए निडर होकर काम किया और साथ ही काँग्रेस के स्वाधीनता आन्दोलन का बढ़–चढ़कर नेतृत्व भी किया। काँग्रेस में उन्होंने 1919 से लेकर 1922 तक महत्त्वपूर्ण भागीदारी अदा की। 1922 में अँग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया। स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस से अलग होने के बाद भी स्वतन्त्रता के लिए लगातार कार्य करते रहे। हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी ने जितने कार्य किए, उस वक्त शायद ही किसी ने अपनी जान जोखिम में डालकर किए हों। समाज के प्रति उनके योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना

अपने जीवनकाल में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् 1901 में अँग्रेजों द्वारा जारी शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान "गुरुकुल" की स्थापना की। हरिद्वार के काँगड़ी गाँव में गुरुकुल विद्यालय खोला गया। वर्तमान समय में यह मानद विश्वविद्यालय है जिसका नाम गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय है। गांधी जी उन दिनों जब अफ्रीका में संघर्षरत थे। स्वामी जी ने गुरुकुल के छात्रों से 1500 रुपए एकत्रित कर गांधी जी को भेजे। गांधी जी जब अफ्रीका से भारत लौटे तो वे गुरुकुल पहुँचे तथा स्वामी जी तथा राष्ट्रभक्त छात्रों के समक्ष नतमस्तक हो उठे।

अन्तिम समय

श्रद्धानन्द की ख्याति दूर–दूर तक फैल गई थी। वे सत्य के पालन पर बहुत जोर देते थे। उन्होंने लिखा है– "प्यारे भाइयो! आओ, प्रतिदिन दोनों समय ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सत्ता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों। सर्वदा सत्य का चिन्तन करें। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित करें।" लेकिन सत्य और कर्म के मार्ग पर चलने वाले इस महात्मा की 23 दिसम्बर, 1926 को चाँदनी चौक, दिल्ली में गोली मारकर हत्या कर दी गई।

इस तरह धर्म, देश, संस्कृति, शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाला यह महान स्वतन्त्रता सेनानी और युगधर्मी महापुरुष सदा के लिए अमर हो गया।

राकेश चक्र
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

अंकों की चित्र पहेली

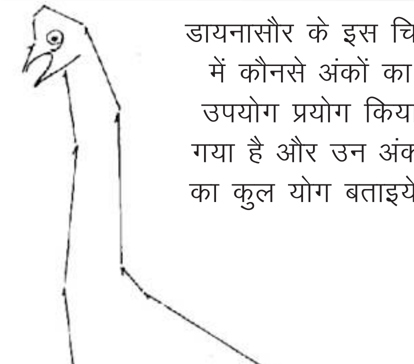

डायनासौर के इस चित्र में कौनसे अंकों का उपयोग प्रयोग किया गया है और उन अंकों का कुल योग बताइये।

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

'पकड़ ली बेल्ट' पृष्ठ 9 का शेष....

चारों तरफ मिट्टी से घिरे उस गड्ढ़े में नरेन्द्र डरकर बुरी तरह रो रहा था। महेश ने उसे सांत्वना दी। "मैं आ गया हूँ अब तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें निकालकर ऊपर ले चलूँगा।" मगर उस छोटी–सी बन्द जगह में चार साल के नन्हे नरेन्द्र से चाहकर भी हौसला नहीं रखा जा रहा था। वह रोए जा रहा था।

महेश ने अपनी कमर से बेल्ट निकाली और नरेन्द्र को कहा कि वह उस बेल्ट को कसकर पकड़ ले ताकि वह उस बेल्ट के सहारे नरेन्द्र को ऊपर खींचकर निकाल सके। अब कोई बड़ा बच्चा होता तो बड़ी आसानी से उसे पकड़ लेता और महेश उसे खींचकर ऊपर निकाल लेता। मगर डरा सहमा हुआ नरेन्द्र रोए जा रहा था और उस बेल्ट को नहीं पकड़ पा रहा था। अगर वह उसे पकड़ भी लेता तो उससे वह बेल्ट घबराहट में छूट जाती। काफी देर तक समझाने–बुझाने के बाद बड़ी मुश्किल से नरेन्द्र ने बेल्ट को पकड़ा।

अब महेश ने ऊपर रस्सी पकड़े लोगों से कहा कि वे लोग ही उन दोनों को सावधानीपूर्वक ऊपर खींच लें। इस तरह उसने इशारा किया और लोगों ने उसे इंच–इंच कर ऊपर खींचना शुरू कर दिया। बीच में हिलने–डुलने से वह किनारे की दीवारों से भी टकरा जाता तो आवाज देकर उनसे रुक जाने को कह देता।

कुछ देर बाद वे दोनों सुरक्षित बाहर निकलकर आ गए। इस तरह महेश की सूझबूझ और हौसले से नन्हे नरेन्द्र की जान बच गई। सभी ने महेश की बहादुरी की तारीफ की और साहस के लिए उसका अभिनन्दन किया।

गाँव के लोगों और महेश के स्कूल ने उसका सार्वजनिक रूप से सम्मान किया और उसके नाम को बहादुरी के पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया। थोटाकुरा महेश को उसके इस साहसिक कार्य के लिए वर्ष 2003 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया। देश की राजधानी दिल्ली में गणतन्त्र दिवस पर प्रधानमन्त्री ने उसे यह सम्मान प्रदान किया। वह राजपथ पर निकलने वाली गणतन्त्र दिवस की परेड में भी शामिल हुआ।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

						2		
	8				7		9	
6		2				5		
	7			6				3
			9		1			
				2			4	
		5				6		3
	9		4				7	
		6						

उत्तर इसी अंक में

विस्मयकारी भारत-14

आन्ध्र प्रदेश व तमिलनाडु की सीमा पर स्थित
वेंकटनरसिम्हाराजुवारिपेट
(VENKATANARASIMHARAJUVARIPETA)
चेन्नई सेंट्रल के हाल में परिवर्तित नाम
पुरातची थलाईवर डॉक्टर एम.जी.रामचंद्रन
सेंट्रल रेलवे स्टेशन
के बाद किसी भी भारतीय रेलवे स्टेशन का दूसरा
सबसे बड़ा नाम है।

अपने देश के सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति थे डॉ. श्रीकांत जिचकर जिन्होंने एमबीबीएस, एमडी गोल्ड मेडलिस्ट, एलएलबी, एलएलएम, एमबीए, बेचलर इन जर्नलिज्म, संस्कृत में डी.लिट. की उपाधि यूनिवर्सिटी टॉपर, एमए (अंग्रेजी, हिंदी, हिस्ट्री, साइकोलॉजी, सोशियोलॉजी, पॉलिटिकल साइंस, आर्कियोलॉजी, एंथ्रोपोलॉजी) आदि 20 स्तरीय डिग्रियां विभिन्न विश्वविद्यालयों से उच्चतम अंकों में प्राप्त की थीं।
25 वर्ष की अल्पायु में वे राजनीति में आ गए और फिर विधायक के तौर पर चुन लिए गए थे परन्तु दुर्भाग्यवश केवल 50 वर्ष की उम्र में एक सड़क दुर्घटना में इस प्रतिभाशाली व्यक्ति का निधन हो गया।

कोलकाता में चाइना टाउन (टांगरा) इलाके का चाइनीज़ काली मन्दिर प्रसाद के मामले में पूरी तरह अनोखा है। मन्दिरों में जहां प्रसाद में अमूमन फल, मिठाई या बताशे आदि चढ़ाए जाते हैं, वहीं इस मन्दिर में प्रसाद के रूप में नूडल, चाउमीन, फ्राइड राइस, मंचूरियन व चॉपसुई जैसी चीज़े चढ़ती हैं और इसकी वजह है यहां के चीनी लोग जिनकी सक्रियता इस मन्दिर में न सिर्फ ज़्यादा है बल्कि मन्दिर की पूरी व्यवस्था भी एक चीनी के ही हाथ है।

मणिपुर की रहने वाली 27 वर्षीय किन्नर बिशेष हुइरेम ने अपनी खूबसूरती की वजह से थाईलैंड में हुए एक ऐसे मिस इंटरनेशनल ब्यूटी क्वीन कांटेस्ट में हिस्सा लिया था जो केवल किन्नरों के लिए ही आयोजित किया जाता है।
वैसे बेंगलुरू विश्वविद्यालय से बिशेष हुइरेम फैशन डिज़ाइनिंग की पढ़ाई कर चुकी हैं और अभी ये मणिपुर की फिल्मों में काम कर रही हैं।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

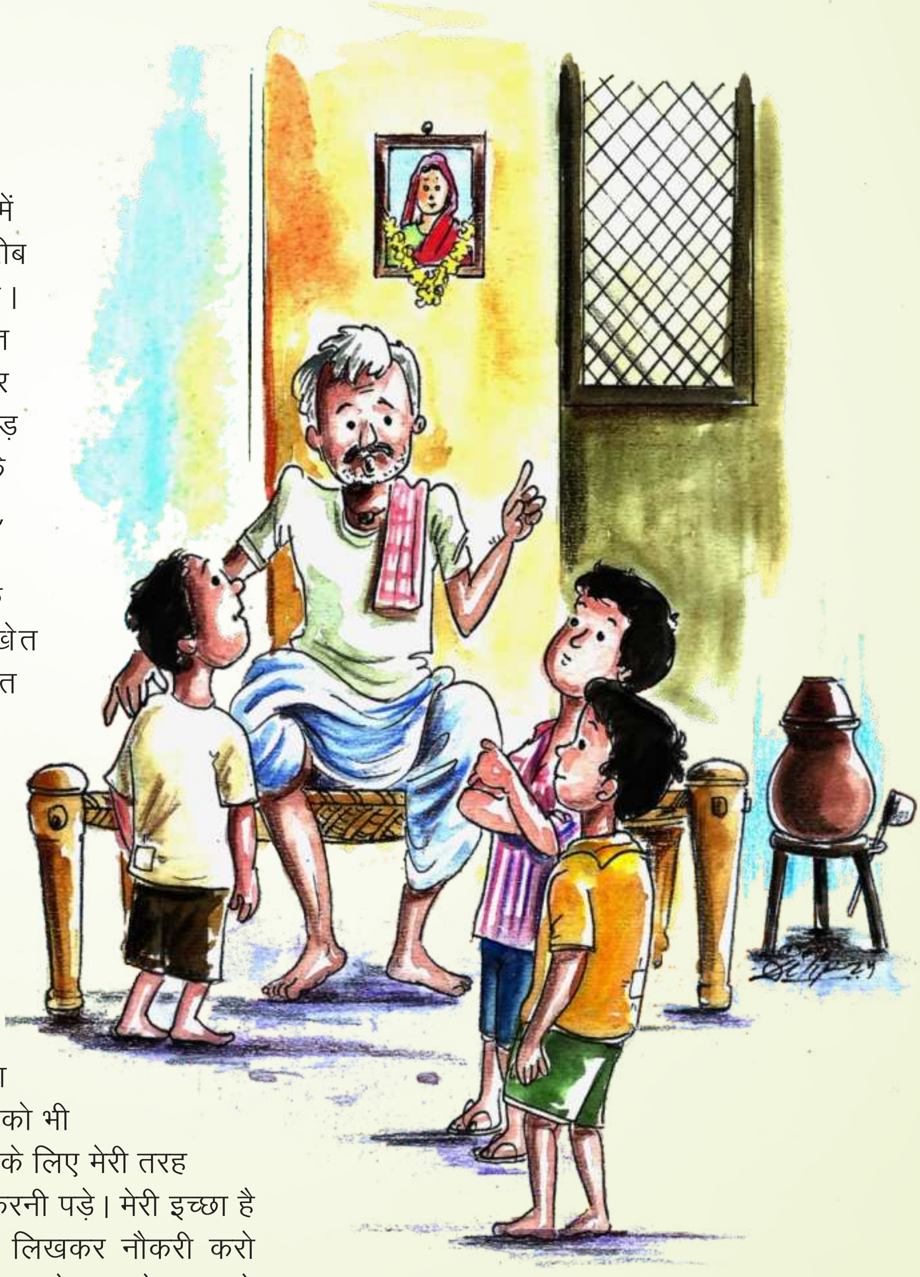

पढ़ाई का उजाला

एक गाँव में दामोदर नामक एक गरीब किसान रहता था। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका था। दामोदर के पास केवल 2 एकड़ कृषि भूमि थी। उसके तीन बेटे थे मोहन, श्याम और गोपाल। दामोदर अपनी खेती के बाद दूसरों के खेत खलिहान में भी मेहनत मजदूरी करके किसी प्रकार मुश्किल से अपने और तीन बेटों के लिए दो वक्त की रोटी जुटा पाता था।

एक दिन उसने तीनों बेटों को पास बुलाया और बोला– "मैं नहीं चाहता कि मेरे बाद तुम तीनों को भी अपनी जीविका चलाने के लिए मेरी तरह कड़ी मेहनत मजदूरी करनी पड़े। मेरी इच्छा है कि तुम सब खूब पढ़ लिखकर नौकरी करो और अपनी जिन्दगी सुख से गुजारो।" सबसे छोटे बेटे गोपाल ने अपने पिता की इस सीख को गम्भीरता से लिया और अपनी पढ़ाई में जोर–शोर से जुट गया। लेकिन दोनों बड़े भाइयों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उनकी रोज की दिनचर्या खाना खाना और बाद में गाँव में हमउम्र दोस्तों के साथ खेलने तक ही सीमित रहती थी।

धीरे–धीरे समय अपनी गति से आगे बढ़ता गया। बच्चे बड़े हो गए, गोपाल गाँव की शाला से अच्छे नम्बरों से पास होकर, छात्रवृति

पाकर शहर पढ़ने चला गया। बड़े दोनों भाई दामोदर की खेती में हाथ बटाने लगे और मेहनत मजदूरी करने लगे। कालांतर में दामोदर की मृत्यु के बाद दोनों बड़े भाइयों ने जमीन हथिया ली। गोपाल अपनी पढ़ाई पूरी कर उसी गाँव की शाला में शिक्षक की नियुक्ति पा गया।

दोनों बड़े भाइयों की आर्थिक हालत बहुत कमजोर थी। मौसम की अनिश्चितता ने कृषि का बहुत नुकसान किया। वह गाँव के साहूकार के कर्ज में डूब गए। एक दिन साहूकार का आदमी पैसे वसूलने आ पहुँचा। नौबत खेत और झोपड़ी बेचने तक पहुँच गई। दोनों भाई सोच रहे थे– हम तो हर साल ब्याज और कुछ मूल भी साहूकार को देते आए हैं फिर यह कर्ज की राशि अभी तक बाकी कैसे है? पूछने पर साहूकार के मुनीम ने बताया मूल रकम पर ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज लगाकर कुल रकम अभी भी 10,000 बाकी पड़ती है, मजबूर होकर झोपड़ी और खेत की नीलामी करनी ही पड़ेगी।

वे दोनों अनपढ़ भाई यह गोरखधंधा समझ नहीं पाए, और अपने छोटे शिक्षक भाई गोपाल के पास भागे–भागे चले आये। रोते हुए दोनों भाइयों ने बताया कि किस तरह एक हजार रुपए कर्ज के बदले 10000 का बाकी बताकर साहूकार उनकी झोपड़ी और खेत जप्त करने आए हैं, जबकि हम चार वर्षों से ब्याज और कुछ मूल भी अदा करते आए हैं। गोपाल ने उन्हें सांत्वना दी और उन्हें लेकर साहूकार के पास आया। वहाँ उसने देखा कि साहूकार ने 10 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की जगह 10 प्रतिशत माहवारी ब्याज लगाया था।

गोपाल साहूकार की चालाकी समझ गया और डाँट कर बोला– "तुम क्या समझते हो? हिसाब केवल तुम्हीं को आता है? अभी के अभी मेरे भाइयों की खेती और झोपड़ी के कागजात वापस करो और जो 4000 ज्यादा वसूल किए हैं, उन्हें भी तुरन्त लौटाओ।" साहूकार कुछ प्रतिकार करता उससे पहले ही गोपाल फिर बोला– "यदि तुमने कहना नहीं माना तो मैं अभी पुलिस स्टेशन जाकर तुम्हारी गैरकानूनी साहूकारी और ठगी की शिकायत कर दूँगा और एफ.आई.आर. भी करूँगा। फिर बैठना जेल में चक्की पीसते हुए।"

गोपाल की यह बात सुनकर साहूकार घबरा गया और खेती और झोपड़ी के कागजात तथा 4000 रुपए, जो ज्यादा वसूले गए थे, उन्हें वापस कर दिये। दोनों भाइयों की आँखें भर आई। वे बोले– "गोपाल, हम तुम्हारा यह एहसान कभी नहीं भूलेंगे, तुमने हम पर यह उपकार करके हमारी जिन्दगी बचा ली।" गोपाल बोला– ''एहसान मेरा नहीं, मेरी इस शिक्षा का मानो। आज यदि पिता जी के कहने पर मैंने शिक्षा ग्रहण न की होती तो तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकता था। हमारे जीवन में पढ़ाई का वैसा ही महत्त्व है, जैसा कि अँधेरे में उजाले का।''

गोपाल ने आगे कहा– ''रोजमर्रा के कार्यकलापों में हमें हमेशा इससे मदद मिलती है। कोई भी इस प्रकार हमारा शोषण नहीं कर सकता। इसीलिए हर व्यक्ति के लिए शिक्षा जरूरी है। शिक्षा ग्रहण करने की कोई उम्र नहीं होती, यदि तुम लोग चाहो तो अभी भी प्रौढ़ शिक्षण और प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत शिक्षित हो सकते हो। याद रखो शिक्षा से बढ़कर कोई भी दौलत नहीं होती।'' दोनों भाइयों ने गोपाल की बात का गर्दन हिलाकर समर्थन किया।

विजय आनदेव
नागपुर (महाराष्ट्र)

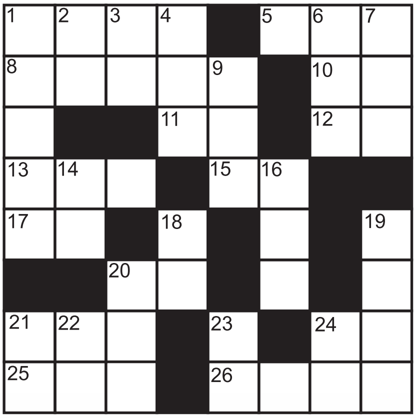

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. जिसमें विद्युत प्रवाहित हो (4)
5. मुख्य, खास, एक पद (3)
8. प्रकाश का एक गुण, अपने मूल स्थान पर आना (5)
10. मिट्टी, धूल (2)
11. खर्च (2)
12. हाथ, शुल्क (2)
13. उत्तीर्ण, कामयाब(2)
15. पानी की टोंटी (2)
17. युद्ध, संग्राम (2)
20. स्वाद, फलों का द्रव (2)
21. ऋतुराज (3)
24. कहने की क्रिया (भूतकाल) (2)
25. धुन, शुभ दिन (3)
26. नींव डालना (4)

ऊपर से नीचे

1. अच्छा मौका (5)
2. वृत्त की परिधि का एक भाग (2)
3. राजा राम का पुत्र (2)
4. अधिकार के साथ यह भी जरूरी है, काम (3)
6. धारण करने वाला (3)
7. दृष्टि, निगाह (3)
9. नेत्र, आँख (3)
14. नाग का फन, रस्सी का फंदा (2)
16. प्रेम, चाहत, अपनत्व (3)
18. निकट, समीप (2)
19. हँसी, खिल्ली उड़ाना (4)
20. बहुमूल्य पत्थर, श्रेष्ठ (3)
21. ताकत, शक्ति (2)
22. साथ, सम्बन्ध (2)
23. रकम (2)
24. बालिका, लड़की (2)

उत्तर इसी अंक में

कबीर वाणी...

ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग।

तेरा साईं तुझ ही में, जाग सके तो जाग।

जैसे तिल के अन्दर तेल होता है, और चकमक पत्थर से आग पैदा होती है, ठीक वैसे ही हमारा ईश्वर हमारे अन्दर ही विद्यमान है, इस बारे में हमें हमेशा जागरूक रहना चाहिये।

चिड़िया आई

वीनू शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

चुनमुन-मुनमुन दोनों आई
दादी माँ को बेहद भाई।
बैठो! दोनों बिटिया रानी
चलो सुनाऊँ एक कहानी।।

चीं-चीं करती चिड़िया आई
पानी पीकर प्यास बुझाई।
बैठ नीम पर झूला-झूली
लगता है दु:ख सारा भूली।।

मम्मी ने कुछ दाने डाले
भर पानी रख डाले प्याले।
अब तो देखो निशदिन आती
सँग में अपनी सखियाँ लाती।।

घर-आँगन है अच्छा लगता
जीवन बिलकुल सच्चा लगता।
सुबह- शाम को कलरव करती
पीड़ाएँ अपनी भी हरती।।

जीवन का सूनापन हटता
दाना पानी दें, क्या घटता।।
बच्चो, कुदरत की है माया
उसने ही हर जीव बनाया।।

दोनों बोली, बात पुरानी
अच्छी लगती हमें कहानी।
कल अम्मा कुछ और सुनाना
गाती कैसे चिड़िया गाना ?

भुनी करारी मूँगफली

लिए रेहड़ी घूम रहा हूँ,
सड़क, मुहल्ले, गली-गली।
आओ-आओ लेकर जाओ,
भुनी करारी मूँगफली।

पन्द्रह की हैं ग्राम डेढ़ सौ,
गरम-गरम लेकर जाओ।
सँग दे रहा नमक-मसाला,
लगा मजे से फिर खाओ।
घुनी नहीं हैं और न थोथी,
दूँगा कोई नहीं जली।...

सस्ता यह बादाम समझ लो,
बनी गरीबों की मेवा।
गली-गली में घूम-घूम कर,
करूँ सभी की मैं सेवा।
नई फसल की नई फली हैं,
खाओ-खाओ लगें भली।...

पोषक तत्व मिलेंगे इसमें,
हैं प्रोटीन विटामिन भी।
सब खाते हैं तुम भी खाओ,
खाएँ ठाकुर बामन भी।
एक किलो तुलवाकर ले गए,
पहलवान जी अभी खली।...

संतोष कुमार सिंह
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

नाटिका

गुरुभक्त धनुर्धर एकलव्य

पात्र : छह वनवासी बालक, एकलव्य, गुरु द्रोणाचार्य एवं उनके शिष्य, सूत्रधार

प्रथम दृश्य

पर्दा खुलता है, मंच से श्लोक गूँजता है–

ओम गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

पेड़ों पर पक्षियों की चहचहाहट गूँज रही है। एकलव्य अपनी झोपड़ी के समीप 5–6 बालकों के साथ बाँस का तीर–धनुष बना कर आम के वृक्ष पर निशाना साधता है।

बालक–1 : सर्वप्रथम मैं लक्ष्य साधूँगा। (यह कहते हुए एक आम पर निशाना लगाता है पर असफल हो जाता है।)

बालक–2 : लाओ मुझे दो, मैं प्रयास करता हूँ। (वह भी असफल हो जाता है।)

बालक–3 : यह तुम लोगों के वश की बात नहीं, मुझे दो धनुष–बाण मैं लक्ष्य साधूँगा। *(वह भी असफल हो जाता है)*

बालक–4 : मुझे दो धनुष–बाण मैं अपना निशाना तुम्हें दिखाता हूँ। *(वह भी असफल हो जाता है)*

बालक–5 : एकलव्य चलो, अब तुम्हारी बारी। तुम्हारा निशाना तो जरूर लगेगा।

बालक–6 : एकलव्य तो ऐसा बाण चलाता है जैसे कोई पारंगत धनुर्धर चला रहा हो।

एकलव्य : ठीक है, मुझे दो धनुष–बाण अब मैं लक्ष्य साधता हूँ। *(यह कहते हुए एकलव्य धनुष–बाण अपने हाथ में लेता है और आम के फल पर निशाना लगाता है। फल नीचे गिर जाता है।)*

बालक–3 : (प्रसन्न मुद्रा में ताली बजाते हुए) एकलव्य जीत गया, एकलव्य जीत गया।

बालक–1 : वाह, क्या निशाना है तुम्हारा!

एकलव्य : मैं सोच रहा हूँ कि राजगुरु द्रोणाचार्य के पास जाऊँ और उनसे धनुर्विद्या की शिक्षा ग्रहण करके इस विद्या में महारत हासिल करूँ।

बालक–2 : अति उत्तम सोच है। तुम गुरु द्रोण के पास अवश्य जाओ।

सभी बालक : हाँ हाँ! अवश्य जाओ।

बालक–4 : जाओ, जरूर जाओ, पर वे तुम्हें क्यों शिष्य बनायेंगे, वे तो राजपुत्रों को ही शिक्षा देते हैं।

एकलव्य : गुरु तो गुरु होता है, उसके लिए राजपुत्र या प्रजापुत्र का भेद कैसा? देखना गुरुजी मुझे अपना शिष्य अवश्य बना लेंगे।

द्वितीय दृश्य

(एक आश्रम के आस–पास भिन्न–भिन्न प्रकार के पेड़–पौधे लगे हैं। उन पर तरह–तरह के पुष्प खिले हैं। एक वृक्ष के पास गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों को धनुर्विद्या की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। तभी एकलव्य आश्रम में प्रवेश करते हुए गुरु द्रोणाचार्य को प्रणाम करता है।)

एकलव्य : प्रणाम गुरुदेव!

द्रोणाचार्य : बोलो वत्स! तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो?

एकलव्य : गुरुदेव, मैं निषादराज हिरण्यधनु एवं माता विडाला का पुत्र एकलव्य हूँ। आपके पास धनुर्विद्या सीखने हेतु आया हूँ।

(द्रोण मन ही मन सोचते हैं– क्षत्रिय बालकों के साथ मैं शूद्र बालक को शिक्षा कैसे दे सकता हूँ?)

द्रोणाचार्य : परन्तु बालक तुम तो शूद्र जाति के हो। इन क्षत्रिय राजकुमारों के मध्य मैं तुम्हें शिक्षा नहीं दे सकता हूँ।

एकलव्य : गुरुदेव! जैसी आपकी इच्छा। मैं तो आपको गुरु मान चुका हूँ। मैं चलता हूँ।

सूत्रधार : द्रोणाचार्य की बात सुनकर एकलव्य जंगल की तरफ बढ़ता है और वहाँ द्रोणाचार्य को अपना गुरु मानकर उनकी मूर्ति स्थापित करता है।

(इस बीच नेपथ्य से एक गीत गूँजता है)

ठुकरा दिया गुरु ने, मगर तूने हार नहीं मानी,
तू बनेगा धनुर्धर ये मन में तूने ठानी।
मूरत बना के गुरु की तुझे तीर चलाना है,
तू हार नहीं माने दुनिया को दिखाना है।
गुरु द्रोण भी न जाने जो तेरा निशाना है,
तू धीर एकलव्य है, तू वीर एकलव्य है।।

तृतीय दृश्य

(कुछ वर्षों के पश्चात् जंगल में एकलव्य अपने अभ्यास में लगा है। तभी द्रोणाचार्य का कुत्ता उधर जाता है और एकलव्य को देखकर भौंकने लगता है। एकलव्य की एकाग्रता भंग होती है और लक्ष्य नहीं साध पाता है। कुत्ता लगातार भौंकता रहता है।)

एकलव्य : अरे! श्वान हमें क्यों परेशान करता है।
(कुत्ता फिर भी भौंकता रहता है।)

एकलव्य : तू ऐसे नहीं मानेगा तो ये लो।

(यह कहते हुए एकलव्य दक्षता के साथ ऐसे सात बाण चलाता है कि कुत्ते का मुख भी बन्द हो जाता है और कुत्ते के मुख से रक्त निकलना तो दूर उसे खरोंच तक नहीं आती है। ये बाण एकलव्य ने इस तरह चलाए थे कि वे कुत्ते के मुख के पास जाते–जाते वेग–शून्य हो जाते थे।)

सूत्रधार : आज द्रोणाचार्य ने अपनी दी हुई शिक्षा की अपने शिष्यों से परीक्षा ली थी जिसमें अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धर घोषित किया गया था। इस हर्षदायक वेला में द्रोण अपने शिष्यों के साथ रथ पर सवार होकर जंगल में भ्रमण करने गये थे। 'आज मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि तुम परीक्षा में दुनिया के श्रेष्ठ धनुर्धर साबित हुए हो।' तभी द्रोण के रथ के

आगे–आगे चलने वाला श्वान वापस अपने स्वामी के पास आता है, जिसका मुख सात बाणों से भरा हुआ था। यह देख अर्जुन और युधिष्ठर आश्चर्यचकित रह गए। द्रोणाचार्य स्वयं भी असमंजस में थे क्योंकि बाण चलाने की यह कला उन्हें भी नहीं आती थी।

चतुर्थ दृश्य

(द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ कुत्ते के पीछे–पीछे जंगल में उस जगह पहुँचते हैं जहाँ एकलव्य धनुर्विद्या के अभ्यास में लगा था। किसी के आने की आहट पाकर एकलव्य अपना अभ्यास रोक देता है। एकलव्य द्रोणाचार्य को देखते ही पहचान जाता है।)

एकलव्य : प्रणाम गुरुदेव!

द्रोणाचार्य : आयुष्मान भव, किससे सीखी तुमने यह धनुर्विद्या? कौन है तुम्हारा गुरु?

एकलव्य : मेरे गुरु आप हैं गुरुदेव! आप से ही मैंने ये विद्या सीखी है।

द्रोणाचार्य : परन्तु मैंने तो किसी गैर क्षत्रिय राजकुमार को कभी शिक्षा नहीं दी है, फिर मैं तुम्हारा गुरु कैसे हुआ? कौन हो तुम ?

एकलव्य : मैं निषाद राज हिरण्यधनु पुत्र एकलव्य हूँ। मैं धनुर्विद्या की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आपके पास आया था। शूद्र होने के कारण आपने मुझे शिक्षा देने से इनकार कर दिया लेकिन मैं हतोत्साहित नहीं हुआ। आपको गुरु मानकर इस जंगल में आपकी मूर्ति बनायी और अभ्यास में लीन हो गया। *(मूर्ति की तरफ इशारा करता है।)*

(द्रोणाचार्य मन ही मन सोचते हैं कि अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धर बनाने का मैंने वचन दिया है, लेकिन एकलव्य के आगे यह सम्भव नहीं दिखता है। मुझे कोई रास्ता निकालना होगा।)

द्रोणाचार्य : यदि मुझे गुरु मानते हो तो क्या गुरु दक्षिणा नहीं दोगे?

एकलव्य : आप आदेश करें गुरुदेव! मैं आपको सहर्ष गुरु दक्षिणा दूँगा।

द्रोणाचार्य : मुझे गुरु दक्षिणा में तुम्हारे दाहिने हाथ का अँगूठा चाहिए।

(एकलव्य यह सुनकर स्तब्ध होने के बजाय गुरु की तरफ देखकर मुस्कुराता है और त्वरित गति से अपनी झोपड़ी में जाकर चाकू लेकर आता है और चाकू से अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काटता है)

एकलव्य : यह लीजिए गुरुदेव आपकी गुरु दक्षिणा।

(द्रोण और उनके शिष्य एकलव्य की गुरुभक्ति को विस्मयभरी नजरों से देखते रह जाते हैं।)

इस अन्तिम दृश्य के साथ नेपथ्य में यह गीत प्रस्तुत होता है ...

खंजर से अपना तूने अँगूठा अलग किया,
गुरु के चरण में अर्पण इसको तूने किया।
गुरु द्रोण के छल को तू तनिक समझ न पाया,
इक पल के फैसले ने बदल दी तेरी काया।
तू वीर एकलव्य है, तू धीर एकलव्य है।
तू दानवीर एकलव्य, धर्मवीर एकलव्य है।।

डॉ. संगीता बलवंत
कलौता गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

(पुराने जमाने में कर्म के आधार पर समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया था– क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण एवं शूद्र। शुद्र वर्ण के लोगों को अछूत माना जाने लगा। इससे समाज में ऊँच–नीच और छुआछूत की बुराई को बढ़ावा मिला। आजादी के बाद भारत का नया संविधान बना। जिसमें सभी नागरिकों को समानता का अधिकार मिला। जाति या वर्ण के आधार पर भेदभाव को अपराध माना गया। आज हालांकि छुआछूत कानूनी रूप से अमान्य है फिर भी पिछड़ी जातियों के साथ कहीं–कहीं अन्याय होता है जो गलत है।)

अणुव्रत की बात

तुलसी का बिरवा

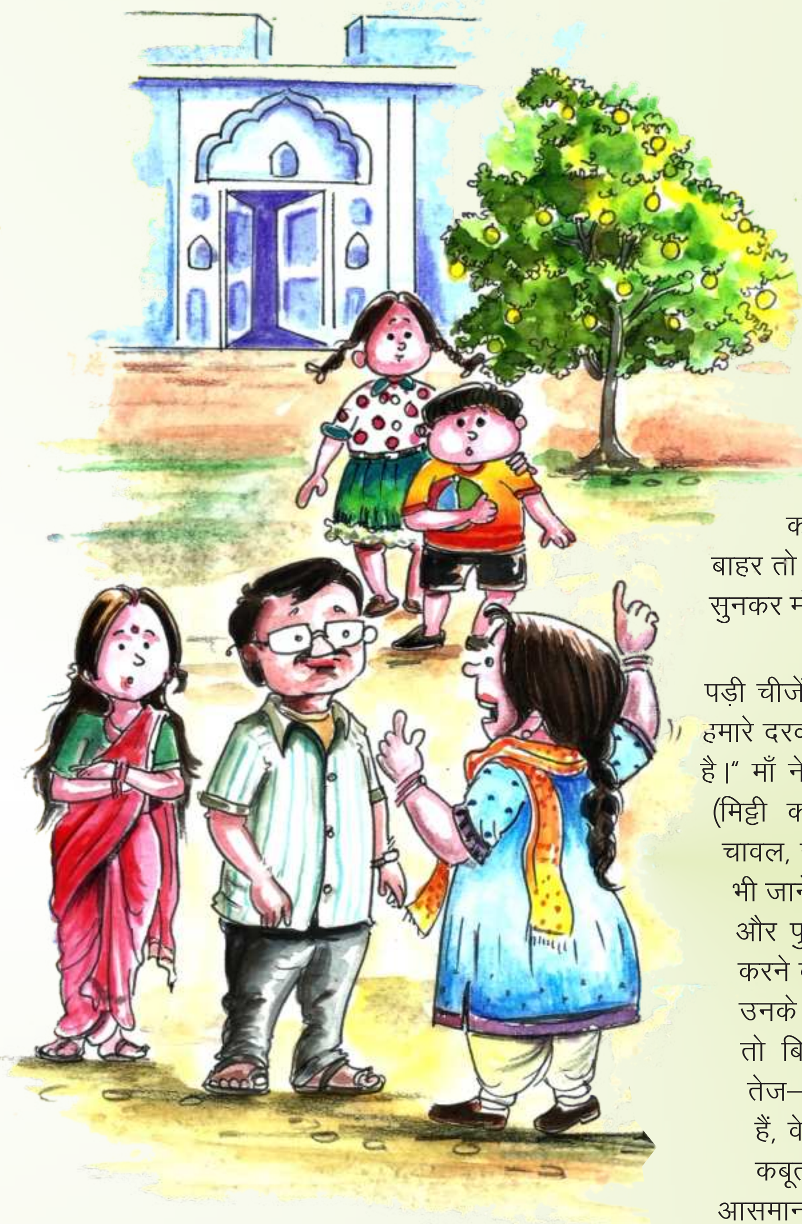

नीबू का पेड़

यह बात कई साल पहले की है। एक सुबह जब चिड़ियाँ चहचहाने लगी थीं और चारों ओर उजाला फैलने लगा था तब रोज की तरह बिट्टो बुआ ने बिस्तर छोड़ दिया। बुआ घर में सबसे पहले जाग जाती हैं। नहा धोकर पूजा–पाठ करके पहले पास के ही एक मन्दिर जाती हैं और फिर सुबह के अपने दूसरे जरूरी काम निपटाकर बाहर चबूतरे पर बैठ जाती हैं। गली में निकलने वाले सब उनसे दुआ सलाम करते हुए निकलते हैं। वह भी सबका हाल–चाल पूछती हैं। यह रोज का नियम है। लेकिन आज सुबह जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला तो देहरी के सामने कुछ अजीब चीजें पड़ी नजर में आई। घबराकर उन्होंने जल्दी से माँ को पुकारा– "रेवा! अरी रेवा! जल्दी बाहर तो आ।" बुआ की आतुरता भरी आवाज सुनकर माँ तुरन्त बाहर आई।

"क्या बात है दीदी?" बुआ ने सामने पड़ी चीजें दिखाते हुए कहा– "देख तो जरा! हमारे दरवाजे पर कोई क्या करामात कर गया है।" माँ ने हैरानी के साथ देखा। एक सरैया (मिट्टी का बड़ा दीपक) में अंडा, सिन्दूर, चावल, नीबू, आटे से बनी कोई आकृति और भी जाने क्या–क्या रखा था। बुआ तंत्र–मंत्र और पुरानी मान्यताओं पर गहरा विश्वास करने वाली महिला हैं। इसलिए यह घटना उनके लिए सामान्य घटना नहीं थी। तभी तो बिट्टो बुआ, जो मोहल्ले भर में बड़ी तेज–तर्रार और हिम्मत वाली मानी जाती हैं, वे उस समय बिल्ली द्वारा खदेड़े गए कबूतर की तरह सहमी हुई थीं और आसमान की ओर हाथ जोड़कर कह रही थीं– "हे भगवान! तू ही रक्षा करना। हमने तो कभी किसी का अनिष्ट नहीं चाहा फिर किसकी आँखों में हम किरकिरी की तरह अखरते हैं।"

इतने में दो–चार लोग इकट्ठे होकर इसी बात पर चर्चा करने लगे कि आखिर मोहल्ले में इस तरह की हरकत कौन कर सकता है? शोरगुल सुनकर पिताजी, मैं और छोटा भाई गोलू भी बाहर आ गए। पिताजी ने पूरी बात सुनी–समझी और बोले– "अरे दीदी, ये करामात, अनिष्ट सब बेकार की मनगढ़न्त बातें हैं। आप ही तो

कहती हैं कि जाको राखै साँइया मारि सकै ना कोय। भला इन चीजों से किसी का क्या अनिष्ट होगा?"

"राजन! तू भला क्या समझे इन तंत्र–मंत्र और टोटकों के मामले में? मैंने खुद तंत्र–विद्या से हरे पेड़ को सूखते देखा है। ये सब अनिष्ट करने के लिए ही काम में लाये जाते हैं और यहाँ तो भगवान भी पीछे हट जाते हैं।" बुआ ने पिताजी को कई उदाहरण देकर चुप करा दिया। बिट्टो बुआ घर में सबसे बड़ी हैं। वे ही बतातीं हैं कि पिताजी को उन्होंने गोद में खिलाया है। इसलिए उनका पिताजी को कोई निर्देश देना, रोकना, समझाना, यहाँ तक कि डाँट देना भी बड़ी सहजता से लिया जाता है। उनकी शादी बचपन में ही कर दी गई थी। पर उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं हुई। कुछ साल पहले उनके पति यानी हमारे फूफाजी का देहान्त हो गया तो पिताजी ने उन्हें यहाँ बुला लिया। तब से वे हमारे साथ ही रहती हैं ।

घर में बुआ का बहुत मान है। उनकी बात को किसी बड़े अधिकारी के आदेश की तरह माना जाता है। उनके आने के बाद घर में बहुत सारे बदलाव किये गए हैं। जैसे पहले दीवार घड़ी दक्षिण की दीवार पर थी अब पूरब में लगा दी गई है। रसोईघर को घर के पूर्व में बनवाया गया है और पूजाघर का द्वार पश्चिम की ओर रखा गया है। बुआ के निर्देश पर ही गुरुवार को बाल और कपड़े धोना, सोमवार को पूर्व की ओर जाना ,मंगल गुरु को शेविंग करना, जैसे काम वर्जित कर दिये गए हैं।

"इससे क्या होता है बुआजी?" मैंने पूछा। "बिटिया घर में सुख–शान्ति, खुशहाली और उन्नति के लिए ये परम्पराएँ बनाई गई हैं।" –बुआ ने बड़े प्यार से मुझे समझाया। मैं बुआ की बातों पर ज्यादा सवाल नहीं उठाती पर गोलू को हर बात में 'क्यों' लगाने की आदत है जैसे कि ''एकादशी को चावल क्यों नहीं खा सकते या सावन के महीने में कढ़ी बनाने से आप माँ को क्यों मना करती हैं? कोई कहीं जाए तो छींकना अशुभ माना जाता है और शनिवार को लोग तेल नहीं खरीदते, क्यों? बुआ जी बताइये न! क्यों ?''

"इन बातों में टाँग अड़ाने की अभी तेरी उम्र नहीं है मेरे लाल।" बुआ गोलू को प्यार से समझाती। खास बात यह है कि बुआ की मान्यताओं और विश्वास के पीछे या तो कोई दमदार तर्क होता है या फिर प्यार भरा आग्रह। इसलिए भी उनकी कोई बात प्रायः टाली नहीं जाती। तभी तो पिताजी बिना ज्यादा सोच–विचार के बुआ की हर बात मान लेते हैं। इसी कारण से उन्होंने आँगन में खड़ा नीबू का पेड़ भी कटवा दिया था क्योंकि बुआ ने पेड़ को देखते ही आपत्ति जताई थी– "अरे आँगन में नीबू का पेड़ तो नहीं होना चाहिये!" और फिर तुरन्त फरमान भी जारी कर दिया– "राजन, जितनी जल्दी हो इस पेड़ को आँगन से हटवा दे। अशुभ है।''

यह सुनकर मैं और माँ अचरज में पड़ गए। पहले तो पिताजी को भी बड़ी हैरानी हुई थी। ''भला पेड़ भी कहीं अशुभ हो सकते हैं? वह भी फलवाला पेड़? उसमें कितने बड़े–बड़े नीबू लगते हैं, एकदम कागजी। जो हमारे ही नहीं पूरे मोहल्ले में काम आते हैं। इससे भला क्या परेशानी है?''

"परेशानी यह है कि यह काँटेदार पेड़ है और काँटेदार पेड़ के घर में होने से अशान्ति फैलती है। झगड़े होते रहते हैं।" बुआ ने पिताजी की शंका को निर्मूल करते हुए कहा– "अब तुम कहोगे कि हमारे घर में कोई अशान्ति या क्लेश नहीं है, पर भैया इसकी सम्भावना तो रहती है।"

"बुआ अशान्ति तो विचारों में मतभेद और आपस में प्रेम न होने से फैलती है। बेचारा पेड़ क्या करेगा?" – मैं कहना चाहती थी। पेड़ को लेकर बुआ का एक भी तर्क हमारी समझ में नहीं आया। पर यह सब मैं कह नहीं सकी। जब पिताजी ही बुआ की बात को नहीं टालते तो हम बच्चे कैसे उनका विरोध करते? हुआ यह कि इसके दूसरे या तीसरे दिन ही हमारा प्यारा नीबू का पेड़ हमेशा के

लिए खत्म हो गया।

नीबू के उस प्यारे पेड़ का कटना हमारे लिये एक दुःखद घटना थी। नीबू का पेड़ हमारे आँगन की शोभा था। उसमें सुन्दर छोटे–छोटे फूल आते थे जिनसे हमारा घर महक उठता था। रसीले कागजी नीबू। पर उससे भी मजेदार बात थी कि सुबह–सुबह चिड़ियों की चहचह से पूरा पेड़ जैसे झुनझुना बन जाता था। साल में एक बार बुलबुल जरूर अपना घोंसला बनाती थी। हमारे लिए वह पूरा महीना उत्सव जैसा होता था। अंडे देने और सेने से लेकर बच्चों के उड़ने लायक हो जाने तक बुलबुल हमारे उस नीबू के पेड़ पर मेहमान बनी रहती थी और हम दोनों उसके घोंसले व बच्चों की गतिविधियाँ देखते रहते थे।

हमारे मन में महीनों तक उस पेड़ के कट जाने की कसक बनी रही और बुआ के प्रति नाराजगी भी थी। दरअसल बुआ हमें प्यार भी बहुत करती हैं, माँ से भी ज्यादा। हमें रोज मजेदार कहानियाँ सुनाती हैं। कागज से कई तरह की चीजें और मेरे लिए सुन्दर गुड़िया बना देती हैं। अगर कोई गोलू को या मुझे तंग करता है तो बुआ उसे भी प्यार से सही सबक सिखा देती हैं। वे माँ और पिताजी का भी बहुत ध्यान रखती हैं। यानी कि बुआ की किसी बात को टाल न पाना या विरोध न कर पाना किसी दबाव के कारण नहीं बुआ के स्वभाव के कारण है लेकिन उनकी ये अन्धविश्वास भरी मान्यताएँ हमें जरूर अखरती थीं। हम चाहते थे कि बुआ पिछड़ी और आधारहीन पुरानी बातों को छोड़ दें।

यही कारण था कि उस समय जबकि बुआ दरवाजे पर रखी चीजों को लेकर काफी चिन्तित और गम्भीर थीं, गोलू ने अचानक ठोकर मार कर उन चीजों को बिखरा दिया। नीबू दूर तक लुढ़कता हुआ चला गया। सिन्दूर बिखर गया, सरैया के दो टुकड़े हो गए। बुआ ने देखा तो अचरज और किसी अज्ञात आशंका से उनकी आँखें फैल गईं। उन्होंने गोलू को खींचकर छाती से लगा लिया और लगभग चीखकर बोलीं– "ये तूने क्या किया मेरे बच्चे!" और फिर मन ही मन कोई मंत्र या स्तुति जपने लगी।

"अरे बुआ, बेकार घबरा रही हो। मुझे कुछ नहीं होगा देख लेना।" गोलू ने बुआ की बाँहों से निकलकर हँसते हुए कहा। "हो तेरे दुश्मनों का। तेरी सारी अलाएँ–बलाएँ मुझे लग जाएँ।" कहते–कहते उनकी आँखें भर आईं। फिर दिन–भर उन्होंने रोज की अपेक्षा ज्यादा देर तक पूजा की। हनुमान चालीसा और न जाने क्या–क्या पढ़ा।

इस बात को कई साल बीत गए हैं। गोलू बुआ को अब भी जब–तब छेड़कर कहता है– "कहिये बुआजी! वह टोटका तो मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाया। मैंने कहा था न कि मुझे कुछ नहीं होगा।" "तुझे क्या, किसी को भी नहीं होता। दीदी तो बेकार ही घबरा गईं थी।" पिताजी गोलू की बात को और आगे बढ़ा देते हैं।

मैंने देखा है कि बुआ अब गोलू की बात से जरा भी नाराज नहीं होतीं। कुछ झेंपकर गोलू के सिर पर हल्की सी चपत लगाती हैं– "हाँ, तू बड़ा सयाना हुआ है।" और मुस्करा देती हैं। अब वे भी मानने लगी हैं कि टोने–टोटके सब व्यर्थ की बातें हैं। डर वास्तव में हमारे विचारों में होता है।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पत्रिका प्रकाशन विशेष सहयोगी

अणुव्रत आन्दोलन के 75 वें वर्ष पर अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत दर्शन को मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में श्री जोधराज जी बैद, डाइरेक्टर, एबीसीआई इंफ्रास्ट्रक्चर प्रा. लि. एवं श्रीमती अमिता बैद, दिल्ली द्वारा दिये गये विशेष सहयोग हेतु अणुविभा आपका हृदय से आभारी है।

हमारा लोकतन्त्र–2

पिछले महीने हमने भारत के लोकतन्त्र के कुछ पक्ष जाने थे। लोकतन्त्र को सही रूप में चलाने के लिए होने वाले चुनावों के बारे में चर्चा की थी। हमने जाना कि कैसे अलग–अलग स्तर पर होने वाले इन चुनावों में जन–प्रतिनिधि चुने जाते हैं जो शासन व्यवस्था को सँभालते हैं। आज हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि क्या देश की राजनीति, चुनाव और सरकार से अलग भी लोकतन्त्र की कोई भूमिका है? क्या लोकतान्त्रिक मूल्य हमारे रोजमर्रा के जीवन को भी प्रभावित करते हैं?

लोकतान्त्रिक मूल्य

आओ, इसके लिए हम सबसे पहले जानते हैं कि क्या होते हैं लोकतान्त्रिक मूल्य? यदि हम भारत के संविधान को आधार मानें तो इसकी प्रस्तावना में चार महत्त्वपूर्ण मूल्यों का जिक्र आया है। ये हैं– **न्याय, स्वतन्त्रता, समता और बन्धुता।** एक लोकतान्त्रिक देश के रूप में हमारा संविधान प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय दिलाने का विश्वास दिलाता है। उसे विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। हर व्यक्ति के लिए प्रतिष्ठा और अवसर की समानता सुनिश्चित करता है और साथ ही, सबके बीच बंधुता बढ़ाने का दृढ–संकल्प व्यक्त करता है।

अब जरा सोचो, यदि ये चारों लोकतान्त्रिक मूल्य प्रत्येक घर–परिवार में भी स्वीकार कर लिए जाएँ और लागू कर दिए जाएँ तो कितना अच्छा हो! फिर तो हर परिवार एक लोकतान्त्रिक परिवार हो जाए। हमें देखना कि हमारे घर में ये लोकतान्त्रिक मूल्य लागू हैं क्या? यदि नहीं हैं तो हम अपने स्तर पर क्या प्रयास कर सकते हैं? परिवार हमारे जीवन की निर्माण शाला होता है, प्रथम पाठशाला होता है। यहाँ जो कुछ हम सीखते हैं, भविष्य में हमारा आचरण उसी अनुरूप होता है। माना कि यह जिम्मेदारी घर के

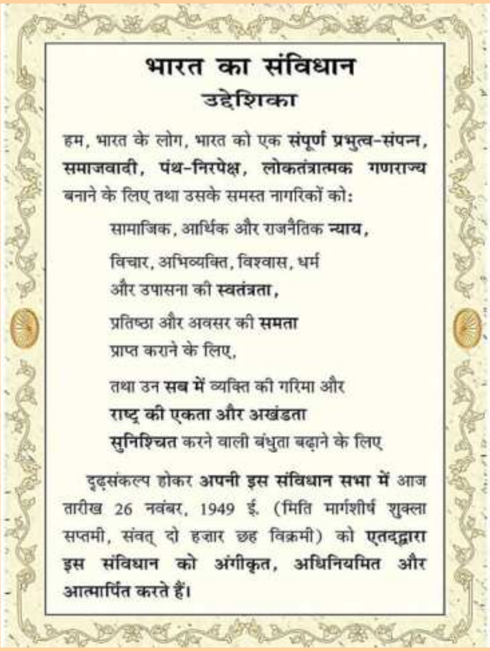

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता** प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और **राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित** करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

यह भारत के संविधान की प्रस्तावना है जिसे उद्देशिका भी कहते हैं। हमारे संविधान की मूल भावना को समझने के लिए आपको इसे अवश्य पढ़ना चाहिए और याद रखना चाहिए।

कतान्त्रिक मूल्य और हमारा परिवार

परिवार के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों का महत्व
Importance of Democratic Values for Family

- सभी सदस्यों की राय का सम्मान
- सद्भाव व समन्वय का वातावरण
- खुले माहौल में प्रतिभाओं को प्रोत्साहन
- शान्तिपूर्ण माहौल में सहज सुख–समृद्धि
- बड़ों के प्रति आदर, छोटों से स्नेह
- व्यवहार में पारदर्शिता

- Respect to every member view and needs
- Better coordination and faith in each other
- Promotes new talent in open atmosphere
- Prosperity and Peace
- Respect to elders and Love for young
- Transparency in relationship

बड़े–बुजुर्गों की होती है कि घर का माहौल कैसा रहे, कौनसे नियम या सिद्धांत घर में लागू किए जाएँ, वगैरह वगैरह! आप छोटे हैं, लेकिन आप भी घर के एक महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। आपकी भी एक भूमिका है। और वह भूमिका आप तभी भली–भाँति निभा पाएँगे जब आपको पूरी जानकारी होगी।

जब हमारा देश भारत एक लोकतान्त्रिक देश है तो हमारा परिवार भी लोकतान्त्रिक होना ही चाहिए। तो आओ, इन चार लोकतान्त्रिक मूल्यों को अपने घर–परिवार की दृष्टि से जानने और समझने की कोशिश करते हैं –

पहला मूल्य है न्याय : परिवार में न्याय का अर्थ है कि परिवार के किसी भी सदस्य के साथ कोई अन्याय न हो। कभी–कभी छोटा होने के कारण, पढ़ाई में कमजोर होने के कारण, लड़की होने के कारण, शारीरिक दृष्टि से असक्षम होने के कारण परिवार में किसी सदस्य के साथ न्याय नहीं किया जाता। उसकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जाता या उसे दबाया जाता है। यह न्याय के लोकतान्त्रिक मूल्य के विरुद्ध है। एक अच्छा परिवार वह है जहाँ किसी से भेदभाव न किया जाए और सबको उनका हक बराबर मिले।

दूसरा मूल्य है स्वतन्त्रता : अर्थात् परिवार के हर सदस्य को अपनी बात कहने की आजादी। अपने विचार सबके सामने रखने की आजादी। यदि परिवार में किसी एक या दो सदस्यों की ही चले और दूसरा कोई अपनी बात कहने की हिम्मत भी न कर सके तो उस परिवार में खुशियाँ ज्यादा समय तक कैसे टिक पाएँगी? उस माहौल में न हर सदस्य अपनी प्रतिभा का उपयोग कर पाएगा और न ही परिवार की खुशहाली में अपना योगदान दे पाएगा। अतः लोकतान्त्रिक परिवार वह है जहाँ हर व्यक्ति खुल कर और शालीनता के साथ अपनी बात कह सके, दूसरों की बात सुन सके और सब मिल बैठ कर, आपसी सहमति बना कर निर्णय ले सकें।

तीसरा मूल्य है समता : इसका अर्थ है कि परिवार के हर एक सदस्य को आगे बढ़ने का समान अवसर प्राप्त हो। अपने–अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ परिणाम हासिल करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अनुकूल माहौल मिले फिर चाहे वह बच्चा हो, लड़का हो या लड़की हो, बुजुर्ग हो, महिला हो या पुरुष हो। सब को सम्मान की दृष्टि से देखा जाए और किसी के साथ ऐसा व्यवहार न किया जाए जो उसको नीचा दिखाने वाला हो। यदि परिवार में समता का भाव विकसित होता है तो किसी के मन में दूसरे के प्रति ईर्ष्या नहीं होगी और झगड़ा या मनमुटाव होने की सम्भावना कम हो जाएगी।

चौथा मूल्य है बंधुता : जिस परिवार में बंधुता की भावना है और सदस्यों के बीच मित्रवत व्यवहार है तो समाज में उस परिवार को इज्जत की नजर से देखा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि मित्रता बराबर उम्र के लोगों बीच ही होती है। हर उम्र के व्यक्ति एक–दूसरे के साथ मित्रता का व्यवहार रख सकते हैं, जरूरत के समय एक–दूसरे के काम आ सकते हैं, मदद कर सकते हैं। जहाँ बड़े हर समय छोटों पर आदेश चलाते रहें और छोटे बड़ों से हरदम डरते रहें, खौफ खाते रहें तो यह एक अच्छे परिवार की निशानी कैसे ही सकती है?

तो बच्चो, अब आपने चार महत्त्वपूर्ण लोकतान्त्रिक मूल्यों को जान लिया है। यह भी कि इन मूल्यों को अपने घर–परिवार में लागू कर के हम अपने परिवार को श्रेष्ठ बना सकते हैं, आदर्श परिवार बना सकते हैं।

एक लोकतान्त्रिक परिवार के नन्हे सदस्य के रूप में आपकी क्या भूमिका हो सकती है, यह अब आपको तय करनी है। सबकी भूमिका तय करने के लिए आप अपने अभिभावकों और भाई–बहिनों के साथ बैठ कर इस आलेख पर चर्चा कर सकते हैं।

आप घर में लोकतान्त्रिक मूल्यों को जितना अपनाएँगे, घर के बाहर भी आप सफलता को अपने नजदीक पाएँगे।

बच्चो, किसी भी देश का लोकतन्त्र भी तभी सही तरीके से काम कर सकता है जब उस देश के नागरिक लोकतान्त्रिक मूल्यों के महत्त्व को समझें और उन्हें उपयोग में लाएँ। आप देश का भविष्य हो और हमारे लोकतन्त्र का भविष्य भी, इसलिए आज से ही आपको कमर कसनी होगी।

संचय जैन
उदयपुर

बसन्त ऋतु का पक्षी

छोटा बसंता

पुक पुक पुक/ठुक ठुक ठुक की आवाज निकालने वाला बसंता पक्षी पेड़ों के ऊपर की पत्तियों में छिपा रहता है। पुक पुक पुक कर अपने गले से ऐसी आवाज निकालता है कि लगता है किसी गाँव की डीजल वाली गेहूँ पीसने वाली चक्की चल रही है। कभी लगता है कोई ठठेरा ठुक ठुक ठुक करके बर्तन की मरम्मत कर रहा है।

यह पंछी है छोटा बसंता। गाँव में, कस्बों में और नगरों के पार्कों के पेड़ों की डालियों में यह छिपा रहता है। एक मिनट में यह लगभग 100 बार पुक पुक पुक की आवाज निकाल सकता है। बच्चे इसकी आवाज सुनकर इसे पेड़ के ऊपर खोजने लगते हैं किन्तु हरे रंग का होने के कारण और आकार में छोटा होने के कारण यह प्रायः दिखाई नहीं देता। करीब 15 सेंटीमीटर लम्बा यह पक्षी 50 ग्राम वजन का होता है किन्तु पुक पुक की आवाज इतनी तेज निकालता है कि आधा किलोमीटर दूर तक सुनी जा सकती है। सुनहरे हरिताभ रंग का होने के कारण यह आसानी से पत्तियों में छिप जाता है।

संस्कृत में इसे डिंडिभ तांब्रक कहते हैं तो हिन्दी में छोटा बसंता, तमेरा, ठठेरा पंछी कहा जाता है। मराठी में जुकटुक कहते हैं। प्राचीन ग्रंथों में इस पंछी का उल्लेख रत्नादि, सोनार, तंबाक नाम से मिलता है। अँग्रेजी में इसका नाम कापर्स मिथ बारबेट है। इसका वैज्ञानिक नाम सिलियो फालेन है।

छोटा और बड़ा बसंता अलग–अलग पंछी हैं। बड़ा बसंता करीब 9 इंच लम्बा होता है। ये दोनों ही बसंत ऋतु के पक्षी हैं। किसी ऊँचे पेड़ के खोखले तने अथवा

देखें पृष्ठ 33...

दस सवाल दस जवाब

(1) चित्र में प्रदर्शित लोगो वाले संस्थानों के पूरे नाम बताओ।

(2) विश्व बैंक का मुख्यालय कहाँ है?

(3) GST का पूरा नाम बताओ।

(4) स्वतन्त्र भारत में पहला सिक्का किस वर्ष जारी हुआ?

(5) भारत में वर्ष 2005 में किस राशि का सिक्का जारी किया गया?

(6) भारतीय नोट पर किस व्यक्ति का फोटो होता है?

(7) एक रुपये के नोट पर किसके हस्ताक्षर होते हैं?

(8) किन पाँच देशों की मुद्रा का नाम 'रुपया' है?

(9) 8 नवम्बर 2016 को घोषित नोटबन्दी में कौन–कौन से नोट प्रचलन से बाहर किये गये?

(10) वर्तमान में भारत के वित्त मन्त्री कौन हैं?

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- मास्टर जी –सबसे ज्यादा नशा किसमें होता है?

  चिंटू– सर, किताब में।

  मास्टर जी – कैसे?

  चिंटू –क्योंकि किताब खोलते ही नींद आ जाती है।

- टीचर– क्या तुम जानते हो विदेश में 15 साल के बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।

  किट्टू– मास्टर जी, हमारे देश में तो एक साल का बच्चा भागने भी लगता है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

दुनिया को अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिये और आपके पास सर्वश्रेष्ठ लौटकर आएगा।

❖

सबसे उच्च कोटि की सेवा ऐसे व्यक्ति की मदद करना है जो बदले में आपको धन्यवाद कहने में असमर्थ हो।

❖

हमें पता होना चाहिए कि भाग्य भी कमाया जाता है और थोपा नहीं जाता। ऐसी कोई कृपा नहीं है जो कमाई न गयी हो।

❖

छात्र की योग्यता, ज्ञान अर्जित करने के प्रति उसके प्रेम, निर्देश पाने की उसकी इच्छा, ज्ञानी और गुरु के प्रति सम्मान में दिखती है।

❖

सम्पूर्ण सुख सद्गुणों और सही ढंग से अर्जित धन से मिलता है।

दयानन्द सरस्वती

ठंड बहुत है

अदरख वाली चाय पी रहे
सुबह–शाम दादा जी।
गजक, मूँगफली लाने का
करते हैं वादा जी।।

तन पर सरसों तेल लगाते
फिर मालिश करते हैं।
लम्बी–लम्बी साँसें लेते
डग लम्बे धरते हैं।।

बच्चों को ना जाड़ा लगता
नंगे पाँव उछलते।
बात–बात में करते मस्ती
खाकर पीकर हँसते।।

चक्रधर शुक्ल
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

डोसा ने बदली आदत

ओह दस! घड़ी पर नजर जाते ही सुनीता के हाथ–पैरों की गति बढ़ गई। साथ ही उसने सोये हुए बारह वर्षीय कौशल को आवाज लगाई– "कौशल... कौशल उठो बेटा! घड़ी में दस बज गए हैं। मैं ऑफिस के लिए लेट हो रही हूँ। क्या नाश्ता नहीं करोगे? कम से कम इतना तो बता दो कि मैं तुम्हारे लिए क्या नाश्ता बनाऊँ।" परन्तु कौशल की आवाज नहीं आयी। तब सुनीता ने कमरे में झाँककर देखा, कौशल सो रहा है। कौशल को नींद में देखकर सुनीता के चेहरे पर सन्तोष की लहर आ गयी। उसे मालूम है कि अच्छे नम्बर लाने के लिए वह देर रात तक पढ़ने में लगा रहता है। सुनीता को बेटे पर प्यार आ गया।

''इसकी पसन्द के पोहे बना देती हूँ। वैसे भी पोहे बनाने में देर कितनी लगती है।'' पोहे निकालकर गलाने लगी ही थी कि ऑफिस से माधव का फोन आ गया–"सुनीता तुम अब तक पहुँची क्यों नहीं ? तुम्हारी वजह से ऑफिस का काम लेट हो रहा है।"

"बस अभी आती हूँ, दो मिनट दीजिए।" कहते हुए सुनीता ने फोन काट दिया। सैंडल पहनते हुए सुनीता ने फिर से कौशल को आवाज दी– "कौशल एक बार उठ जाओ। मेरी बात ध्यान से सुन लो, फिर चाहे वापस सो जाना।" परन्तु कौशल बिलकुल नहीं हिला। सुनीता ने खाने की पूरी सूची सोये हुए कौशल को सुना दी– "तुम्हारे लिए मैंने आलू मटर की सब्जी बना दी है। थोड़ा करेला भी ले लेना और मैंने उसमें लहसुन नहीं डाली है। उठो तब नाश्ता कर लेना। पोहा बनाकर जा रही हूँ। हाँ, मैंने उसमें नीबू डाल दिया है। चलो मैं चलती हूँ।" कहती हुई सुनीता दरवाजा बन्द कर ऑफिस के लिए निकल गई।

लगभग बारह बजे सुनीता के फोन से कौशल की नींद खुली। "उठ गए बेटा! बारह बज गई है। ब्रश करके नाश्ता कर लेना। पोहा बनाकर मैंने हॉटकेस में रख दिया है और समय से लंच भी ले लेना।" सुनीता ने सारे खाने की सूची दोहरा दी। "तुमने मेरे नाश्ते में क्या बनाया है?" कौशल ने जम्हाई लेते हुए माँ से पूछा।" "पोहा बेटा!" "ओ नो यार, मॉम रोज पोहा मैं नहीं खाने वाला।" "तो क्या बनाती? तुमसे पूछा भी था पर तुम गहरी नींद में सोए हुए थे।" "नहीं, आज मेरा पोहा खाने का मन नहीं है। मैं नहीं खाने वाला।" कौशल ने कहा– "क्यों ?" माँ ने चकित होकर पूछा।

"मेरा डोसा खाने का मन है। छोड़ें, आप टेंशन नहीं लें, मैं मैनेज कर लूँगा।" कहते हुए कौशल ने फोन काट दिया। सुनीता ने दोबारा फोन लगाया। घंटी बजती रही पर फोन उठाने

वाला कोई नहीं था क्योंकि कौशल बाथरूम में घुस चुका था। फ्रेश होकर बाथरूम से निकले कौशल ने अपना स्मार्टफोन सँभाला। वह सोच चुका था कि आज नवरत्न रेस्टोरेंट से मैसूरी डोसा खाना है। उसने फटाफट नम्बर मिलाकर होम डिलीवरी का आर्डर दे दिया। ऑर्डर करने के बाद वह उन्हीं बिखरे हुए सलवट पड़े बिस्तरों पर बैठ गया। उसने अपना लैपटॉप खोलकर कॉपी खोल ली। स्क्रीन पर स्मार्ट क्लास चल रही थी। कौशल ने क्लॉस ज्वाइन की और पढ़ाई में लग गया।

डोर बेल बजने के साथ उसे याद आया कि होम डिलीवरी बॉय नाश्ता लेकर आया होगा। उसने दरवाजा खोला। सामने रेस्टोरेंट से नाश्ता लेकर आया हुआ लड़का खड़ा था। एकदम चुस्त दुरुस्त, सुन्दर सा। उसकी हेयर स्टाइल उसे स्मार्ट लुक दे रही थी। कौशल ने एक नजर अपने पर डाली अपनी स्थिति का एहसास होते ही उसने डिलीवरी बॉय के हाथ से नाश्ते का पैकेट खींच लिया और भड़ाक से दरवाजा बन्द कर दिया।

नाश्ता टेबल पर रख दर्पण में खुद को निहारने लगा। आँखें गन्दगी से भरी हुई थी और बाल भी बेढंगे से बिखरे हुए थे। चेहरे के एक ओर मुँह से निकली हुई सूखी लार का निशान था। ''शट! क्या हुलिया है यार!'' दर्पण में अपनी छवि को देखकर उसने जोर से पैर पटका। वह नाश्ता भूल गया। सीधा बाथरूम में नहाने चला गया। नहाकर बाहर आया तो फोन की घंटी बज रही थी। देखा सुयश कॉल पर था। "हेलो गुड मॉर्निंग कौशल।"

"क्या मजाक कर रहे हो? गुड आफ्टरनून बोलो, दिन के दो बज रहे हैं।" ?

"यार मैं तुझे मैथ्स के कल वाले टेस्ट के बारे में पूछ रहा था।"

दोनों दोस्त बात करने लगे। कौशल ने बात करके फोन रखा तब तक तीन बज चुके थे। फोन बन्द होने के बाद कौशल को अपना नाश्ता याद आया– ''इसने तो मेरा नाश्ता भी ठंडा करवा दिया।'' वह बड़बड़ाया। रेस्टोरेंट से आये डोसा का पैकिंग खोलने के साथ ही कौशल के हाथ तेज गति से चल रहे थे। ''बहुत समय वेस्ट हो गया'' बड़बड़ाते हुए उसने लैपटॉप सामने रख लिया क्योंकि स्मार्ट क्लास शुरू हो चुकी थी। ''अब तक तो तीन चैप्टर ऑनलाइन हो जाने चाहिए।'' उसने अपना टारगेट सामने रखा और उसे पूरा करने के लिए पूरी तरह से लैपटॉप में डूब गया।

तभी उसके मुँह में एक कसैला स्वाद घुल गया। स्वाद के साथ दाँतों में कड़क–सा कुछ लगा। कौशल ने प्लेट में मुँह का निवाला उलट दिया। मुँह से निकला हुआ खाना देखकर उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। निकलने वाली चीज अधजली बीड़ी का टुकड़ा था।

'शट! डेम!' गुस्से से उसने प्लेट एक ओर खिसका दी। उसे उबकाई आने लगी। ''वह बिना देखे कैसे खाये जा रहा था? पता नहीं अब तक इस डोसे के साथ क्या–क्या खा चुका होगा क्योंकि उसका ध्यान तो अपने लैपटॉप पर चल रहे चैप्टर पर लगा हुआ था।'' सोचते ही उसे एक और उबकाई आई। बहुत जोर से। उसने मुँह पर हाथ रखा और बाथरूम की ओर दौड़ा किन्तु बॉथरूम तक पहुँचने से पहले ही उसे उल्टी हो गई। उसकी हालत दयनीय हो गई। घर में वह अकेला था। किसको आवाज देता? कौन पानी लाकर देता? कौन यह फैली हुई गन्दगी साफ करता? उसे खुद पर घिन्न आ रही थी। ''काश! अभी मम्मी होती तो वह सब कुछ साफ कर सही कर देती। अब मैं क्या करूँ?'' उसने मम्मी को फोन लगाया।

"आप एक बार घर आ जाओ मम्मा।" "अभी कैसे आ जाऊँ? ऑफिस में बहुत काम पड़ा है।" "नहीं। मैं कह रहा हूँ एक बार घर आओ अर्जेंट।" कह कर कौशल ने फोन काट दिया। परेशान सुनीता कौशल को फोन लगाती रही। कौशल ने फोन नहीं उठाया। ''क्या हो गया है बेटे को?'' माधव से घर की इमरजेंसी कहकर उसने अपनी स्कूटी स्टार्ट की और घर आ गई।

देखें पृष्ठ 37....

व्हाट्सएप कहानी

बासमती चावल बेचने वाले एक सेठ की स्टेशन मास्टर से साँठ–गाँठ हो गयी। सेठ को आधी कीमत पर बासमती चावल मिलने लगा। सेठ ने सोचा कि इतना पाप हो रहा है, तो कुछ धर्म–कर्म भी करना चाहिए। एक दिन उसने बासमती चावल की खीर बनवायी और किसी साधु बाबा को आमन्त्रित कर भोजन प्रसाद लेने के लिए प्रार्थना की।

साधु बाबा ने बासमती चावल की खीर खायी। दोपहर का समय था। सेठ ने कहा– "महाराज! अभी आराम कीजिए। थोड़ी धूप कम हो जाय फिर पधारियेगा।'' साधु बाबा ने बात स्वीकार कर ली। सेठ ने सौ रुपये वाली एक लाख जितनी रकम की गड्डियाँ उसी कमरे में चादर से ढँककर रख दी। साधु बाबा आराम करने लगे। खीर थोड़ी हजम हुई।

साधु बाबा के मन में हुआ कि– ''इतनी सारी नोट की गड्डियाँ पड़ी हैं, एक–दो उठाकर झोले में रख लूँ तो किसको पता चलेगा?'' साधु बाबा ने एक गड्डी उठाकर रख ली। शाम हुई तो सेठ को आशीर्वाद देकर चल पड़े। सेठ दूसरे दिन रुपये गिनने बैठा तो एक गड्डी कम निकली।

सेठ ने सोचा कि– ''महात्मा तो भगवत पुरुष थे, वे क्यों लेंगे?'' नौकरों की धुलाई–पिटाई चालू हो गयी। ऐसा करते–करते दोपहर हो गयी। इतने में साधु बाबा आ पहुँचे तथा अपने झोले में से गड्डी निकाल कर सेठ को देते हुए बोले– "नौकरों को मत पीटना, गड्डी मैं ले गया था।" सेठ ने कहा– "महाराज! आप क्यों लेंगे?'' ''जब यहाँ नौकरों से पूछताछ शुरू हुई तब कोई भय के मारे आपको दे गया होगा। और आप नौकर को बचाने के उद्देश्य से ही वापस करने आये हैं क्योंकि साधु तो दयालु होते है।" साधु– "यह दयालुता नहीं है। मैं सचमुच में तुम्हारी गड्डी चुराकर ले गया था।'' साधु ने कहा– ''सेठ! तुम सच बताओ कि तुम कल खीर किसकी और किसलिए बनायी थी?"

सेठ ने सारी बात बता दी– ''स्टेशन मास्टर से चोरी के चावल खरीदता हूँ, उसी चावल की खीर थी।'' साधु बाबा– "चोरी के चावल की खीर थी इसलिए उसने मेरे मन में भी चोरी का भाव उत्पन्न कर दिया। सुबह जब पेट खाली हुआ, तेरी खीर का सफाया हो गया तब मेरी बुद्धि शुद्ध हुई कि 'हे राम... यह क्या हो गया? मेरे कारण बेचारे नौकरों पर न जाने क्या बीत रही होगी। इसलिए तेरे पैसे लौटाने आ गया।" इसीलिए कहते हैं कि– ''जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन।''

''बसंत ऋतु का पक्षी : छोटा बसन्ता'' पृष्ठ 28 का शेष...

डाल में पतला–सा छेद बनाकर मादा बसंता सफेद रंग के छोटे–छोटे 4 अंडे देती है। 30 दिन में इनसे बच्चे निकल आते हैं। नर और मादा दोनों बच्चों को पालते हैं।

छोटा बसंता का मुख्य भोजन पीपल, बरगद, गूलर, अंजीर के फल हैं। किन्तु हवा में उड़ते छोटे–छोटे कीड़े भी छोटा बसंता खाता है। इसके चोंच और पंजे लाल रंग के तथा गले में रक्ताभ धब्बे होते हैं। अगल–बगल पीले रंग के धब्बे होते हैं तथा पेट का रंग धूसर होता है।

छोटा बसंता भारतीय उपमहाद्वीप में भारत, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यामार आदि देशों में पाया जाता है। पहाड़ों में 1000 फीट की ऊँचाई तक इसे देखा गया है। इसकी अनेक जातियाँ और प्रजातियाँ एशिया महाद्वीप में पाई जाती हैं।

शिवचरण चौहान
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

अम्बिकापुर

सफाई में जमाई धाक

बच्चो, छत्तीसगढ़ का छोटा–सा कस्बा है, अम्बिकापुर। यहाँ के लोगों ने बीते 8 वर्षों से लगातार स्वच्छता के मामले में सिरमौर होने का गौरव प्राप्त किया है।

छोटा कस्बा बड़ा मुकाम– उत्तरी छत्तीसगढ़ में 10 किलोमीटर क्षेत्रफल और 2 लाख से भी कम आबादी वाले इस कस्बे ने स्वच्छता सर्वेक्षणों में हमेशा अपनी अव्वल स्थिति दर्ज कराई है। 2015 से अब तक लगातार आठ बार इसे यह श्रेय प्राप्त हुआ है। यहाँ अपनी तरह का अनूठा "गार्बेज कैफे" है जहाँ कोई भी व्यक्ति प्लास्टिक का कचरा जमा देकर मुफ्त में भोजन कर सकता है। इस कस्बे में डेढ़ किलोमीटर लम्बी एक सड़क पूरी तरह प्लास्टिक के दानों से बनाई हुई है।

बना मॉडल कस्बा– कई राज्यों के विशेषज्ञ अम्बिकापुर के सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट मॉडल का अध्ययन कर रहे हैं। स्वच्छता का पूरा मिशन यहाँ की 470 अम्बिकाएँ, जिन्हें 'स्वच्छता दीदी' के नाम से भी जाना जाता है, पूरा करने में जुटी हुई हैं। इनका नेतृत्व करती हैं रितु सेन। रितु सेन एक आईएएस ऑफिसर हैं जो सरगुजा की जिला कलेक्टर भी हैं। अम्बिकापुर म्युनिसिपल कॉरपोरेशन में कार्यरत सभी स्वच्छता दीदियाँ हर दरवाजे पर जाकर कचरा इकट्ठा करती हैं।

कचरे का पहाड़ बना उद्यान– किसी समय यहाँ 25 साल पुराना कचरे का पहाड़ हुआ करता था जो बुरी तरह बदबू मारता था। इसके बाद सूरत ऐसी बदली कि आज यहाँ 14 एकड़ के क्षेत्र में वनस्पति उद्यान बना हुआ है जहाँ लोग चाव से घूमने–फिरने आते हैं। रितु सेन की इस मुहिम में कस्बे की महिलाओं और पुरुषों ने भरपूर मदद की। सफाई अभियान का निरीक्षण करने वाले टैबलेट्स और ब्लूटूथ प्रिंटर साथ रखते हैं और घरों से कचरा इकट्ठा करने की पूरी कार्रवाई पर नजर रखते हैं। कस्बे के सभी 48 वार्ड आज की तारीख में कचरा–पात्र से मुक्त हो चुके हैं।

सब कुछ है सिस्टेमैटिक– यहाँ 18 कचरा छाँटने वाले केन्द्र हैं जहाँ गीला और सूखा कचरा अलग करके उसे प्रोसेसिंग सेंटर में भेजा जाता है। स्वच्छता दीदियाँ रोज हजारों बोतलों के ढक्कन अपने हाथों से खोलकर अलग करती हैं ताकि उन्हें रीसायकल किया जा सके। यहाँ हर रोज करीब 50 टन कचरा इकट्ठा किया जाता है। 70 फ़ीसदी गीले कचरे से कम्पोस्ट खाद बनाई जाती है और सूखे कचरे की 22 श्रेणियों में गार्बेज क्लीनिक में छँटाई की जाती है। कम्पोस्ट एवं अन्य तरह के कचरे की बिक्री से हर महीने 9 से 10 लाख रुपए की कमाई होती है।

दीदी बर्तन बैंक– अम्बिकापुर में दीदी बर्तन बैंक एक अनूठा प्रयोग है। यहाँ सिटी लेवल फेडरेशन की 210 महिला सदस्य और 21 स्वयं सहायता समूह किसी अनुष्ठान के लिए स्थानीय लोगों को स्टील के बर्तन उपलब्ध करवाते हैं ताकि डिस्पोजेबल बर्तनों का प्रयोग ना हो और पर्यावरण में प्रदूषण को फैलने से रोका जा सके ।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

पिछली सदी में हमारे पड़ोसी देश में एक राजा राज्य करता था। उसके राज्य में बहुत खुशहाली थी। अनेक झीलें और नदियाँ थी जिनसे नहरें निकाल कर खेतों की सिंचाई की उत्तम व्यवस्था की गई थी। किसान साल में कई–कई फसलें उगाते थे। खेतों के चारों ओर फलों के बाग तथा दूर–दूर तक जंगल फैले हुए थे। जंगलों में विविध प्रकार के जीव–जन्तु व पशु–पक्षी निवास करते थे, जिनमें साँपों की अनेक प्रजातियाँ भी थीं। छोटे–छोटे चार इंच के साँपों से लेकर भारी भरकम अजगर तक सभी प्रकार के साँप वहाँ देखे जा सकते थे। लेकिन राजा को साँप अच्छे नहीं लगते थे। राजा को साँपों से डर जो लगता था।

एक बार एक साँप किसी चूहे का पीछा करता हुआ राजमहल में घुस आया। वैसे तो साँप ने राजा से कुछ नहीं कहा और चूहे को पकड़कर चुपचाप खिसक लिया, लेकिन राजा साँपों से इतना डर गया कि उसका महल से बाहर निकलना मुश्किल हो गया। उसे लगता था कि चारों तरफ साँप ही साँप हैं जो उसे डसने की प्रतीक्षा में रहते हैं।

साँपों का शाप

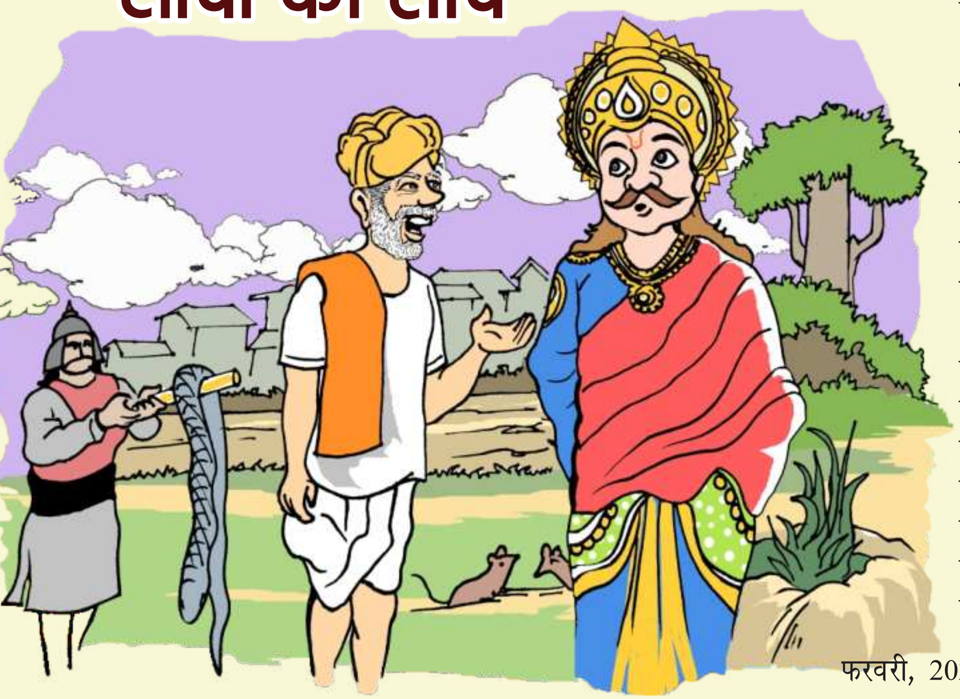

साँपों के डर के कारण राजा ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि देश के अन्दर जितने भी साँप हैं, सभी को मार दिया जाए। अब राजा की आज्ञा का उल्लंघन कैसे हो सकता था? राज्य के अनेक कर्मचारी साँपों को ढूँढ़–ढूँढ़ कर मारने के कार्य में जुट गए। कुछ ही दिनों में लगभग सभी साँपों का सफाया हो गया। राजा बड़ा खुश हुआ लेकिन उसकी खुशी देर तक नहीं टिकी। साँपों के सफाए के बाद उस साल खेतों में न तो अच्छी फसल ही हुई और न बाग़ों में फल ही। देश में अकाल जैसी स्थिति हो गई। लोगों ने दबी जबान से कहा कि साँपों के शाप के कारण ये स्थिति उत्पन्न हुई है।

राजा ने देखा कि किसानों ने फसलें भी बोई हैं और पानी की कमी भी नहीं है फिर अनाज कहाँ गया? राजा ने अनेक लोगों से इस विषय पर मन्त्रणा की लेकिन कोई इस समस्या का कारण नहीं बता पाया। एक वृद्ध किसान जो कि अत्यन्त अनुभवी लगता था, राजा के दरबार में आया और कहा कि महाराज इस संकट का कारण है साँपों का सफाया।

''साँपों के मारने से भला खेती पर क्या असर पड़ सकता है?'' राजा ने किसान से जानना चाहा। फिर राजा ने ही कहा कि– ''साँप तो हमारे दुश्मन हैं। उनके काटने से हर साल न जाने कितने लोगों की मृत्यु हो जाती है। साँप नहीं होने से तो हम बेखौफ होकर खेतों

में जा सकते हैं और पहले से भी अधिक अच्छी तरह कार्य कर सकते हैं। इससे तो पैदावार बढ़नी ही चाहिए न?''

''नहीं महाराज! नहीं।'' किसान ने राजा से कहा– ''साँप हमारे शत्रु नहीं अपितु अच्छे मित्र हैं। एक तो सभी साँप जहरीले नहीं होते और फिर वे बिना वजह किसी मनुष्य को काटते भी नहीं। हाँ, वे चूहों जैसे जानवरों का शिकार खूब करते हैं। चूहे उनका सबसे प्रिय भोजन है लेकिन यही चूहे किसान के सबसे बड़े शत्रु हैं। चूहे फसल को बहुत नुक़सान पहुँचाते हैं। देश में साँपों का सफाया हो जाने के बाद तो चूहों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई और उन्होंने सारी फसलें चट कर डाली।''

वृद्ध किसान ने अपनी चतुराई और सूझ–बूझ से राजा के मन से साँपों का भय भी मिटा दिया। अब तो राजा को भी अपनी भूल का अहसास हो गया था। उसने साँपों के मारने पर पाबन्दी लगा दी। धीरे–धीरे देश में साँपों की संख्या बढ़ने लगी। वे खेत–खलिहानों और बाग–बगीचों में चारों तरफ दिखलाई पड़ने लगे। जैसे–जैसे साँपों की संख्या बढ़ने लगी चूहों की संख्या कम होने लगी और अब फसलें बरबाद नहीं होती थीं। राज्य में फिर से खुशहाली आ गई।

सीताराम गुप्ता
दिल्ली

''वास्तव में इस संसार में कोई भी प्राणी फालतू नहीं है। सभी प्राणियों के आपसी सहयोग से ही सृष्टि का विकास और पोषण होता है। यदि हमारी गलती या लोभ से एक प्राणी भी विलुप्त हो गया तो पेड़–पौधों का ही नहीं अन्य प्राणियों और हम सबका जीवन भी खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए सभी जीवों के साथ अच्छा व्यवहार करना अनिवार्य है। जीव–जन्तुओं अथवा पशु–पक्षियों को सताने या उनको मारने की अपेक्षा उनकी रक्षा में ही मनुष्य का जीवन सुरक्षित है।''

दिमागी कसरत

इस चित्र पहेली में चित्र देखकर उस शब्द के बॉक्स में स्पेलिंग लिखना है। ध्यान रहे कि चित्र 1–3 के शब्दों के अंत में K और चित्र 4–8 के प्रारम्भ में K है।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर

बूझो तो जानें

1

पानी की बौछार लिए,
हरियाली-उपहार लिए।
भारत आती आधे जून,
कहते आया मानसून।

5

मेढक दादा चुपके-चुपके,
जाने की तैयारी करते।
दीप पर्व के जलते दीपक,
इस ऋतु का स्वागत करते।

2

यह कोहरे की चादर तान,
करती है सबको हैरान।
सूरज दादा नजर न आते,
बच्चे कट्-कट् दाँत बजाते।

3

रंग-बिरंगे प्यारे फूल,
वन-उपवन में जाते फूल।
मंद हवा बहती सर-सर,
गाता कोयल गीत मनोहर।

4

तपती धरती जलते पाँव,
भली नीम की शीतल छाँव।
कुल्फी ठंडी आइस्क्रीम,
बिकने लगते गाँव-गाँव।

भानु प्रताप सिंह, फतेहपुर (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

''**डोसा ने बदली आदत**'' पृष्ठ 32 को शेष....

उसके डोर बेल बजाने से पहले ही कौशल ने दरवाजा खोल दिया। "माँ मुझे माफ कर दो।" और वह अपनी बाँहों का घेरा डाल करके माँ से लिपट गया। स्कूटी से घर के रास्ते के चलते हुए सुनीता के मन में बुरे–बुरे खयाल आ रहे थे कि कहीं कौशल के साथ कोई दुर्घटना नहीं हो गई हो। मन ही मन भगवान से प्रार्थना करती रही। बेटे को सही सलामत देखकर उसे तस्सली हुई। कौशल उससे बुरी तरह चिपका हुआ था। वह बोली– "बताओ बेटा ऐसा क्या हुआ? मुझे अर्जेंट क्यों बुलाया?"

"सॉरी मम्मा! मैंने आपको सॉरी कहने के लिए बुलाया है। अब मैं कभी भी देर से नहीं उठूँगा। आपका बनाया हुआ नाश्ता खाऊँगा।'' बहुत कुछ कौशल अपनी माँ से कहता जा रहा था। तभी सुनीता दो कदम आगे बढ़ी। देखा सामने गन्दगी फैली हुई थी।

"प्लीज माँ आज साफ कर दो।" कहते हुए कौशल ने आज का घटा हुआ सब वाकिया कह सुनाया। "मैं कहती थी ना कि पढ़ाई के साथ–साथ सेहत भी सँभालना जरूरी है। जिसके लिए अच्छी आदतों को अपनाना होगा।"

कौशल बोला– "सॉरी बोला ना मम्मी! आज मुझे सब समझ आ गया है। आपके हाथों से बने खाने का मूल्य मुझे समझ आ चुका है। अच्छी आदतों का मूल्य भी मुझे समझ में आ गया है। पढ़ाई के साथ–साथ सेहत को सँभालना भी बहुत जरूरी है।" कहते हुए कौशल ने मम्मी के गालों पर एक चुम्मी दे दी। कौशल की इस चुम्मी से मम्मा भी निरुत्तर हो गई।

डॉ. विमला भंडारी
सलूम्बर (राजस्थान)

विश्व विरासत स्थल-5

अजन्ता की गुफाएँ

बच्चो! आपने रामायण और अन्य सीरियलों में गुफाओं के बारे में जरूर देखा होगा। उनके रहस्य जानने में आपकी दिलचस्पी भी जरूर होगी। हम आपको भारत की सबसे प्राचीन गुफाओं के रहस्य के बारे में बताने जा रहे हैं। अजन्ता की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। अजन्ता गाँव के आसपास होने के कारण इनका यह नाम पड़ा है। 1819 ई. में ब्रिटिश सेना के मद्रास रेजिमेंट के एक सैनिक अधिकारी जान स्मिथ ने शिकार के दौरान इन गुफाओं को ढूँढ निकाला था।

वर्ष 1983 ई. में यूनेस्को द्वारा इन गुफाओं को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था। इन गुफाओं का निर्माण दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 650 ई. के मध्य माना जाता है। वाकाटक सम्राट होरीसेन के शासनकाल में इन गुफाओं का बनना प्रारम्भ हुआ था। 29 चट्टानों को काटकर 25 विहार और 4 चैत्य बनाये गये हैं। जिनमें बौद्ध धर्म की करुणा और दयामयी भावनाओं के दर्शन शिल्पकला एवं चित्रकला के माध्यम से होते हैं। गुफाओं की दीवारों और छतों पर बनाये गये चित्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जातक कथाओं अर्थात् भगवान बुद्ध के जन्म और जीवन से जुड़ा इतिहास है।

अजन्ता की गुफाओं में तत्कालीन भारतीय समाज, संस्कृति, कला, वास्तुकला और चित्रकारी के बेजोड़ नमूने देखने को मिलते हैं। सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत की झाँकी आँखों के सामने साकार हो उठती है। दीवारों पर उकेरे गए चित्रों में आभूषण, तालें और लोकजीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को देखा जा सकता है। चित्रकारों ने मानवीय भाव भंगिमाओं की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की है। इन गुफाओं को देखने के लिए प्रतिवर्ष देश–विदेश के लाखों पर्यटक आते हैं।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
नई दिल्ली

हमारा गौरव

अजय अपने कक्षा कक्ष की ओर तेजी से भागा जा रहा था। वह कोई दस मिनट लेट था। हाँपते हुए पहुँचा और बाहर ही खड़ा होकर बोला– ''सर, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?'' सर ने तीखी नजरों से देखते हुए कहा– ''नहीं–नहीं, तुम दस मिनट लेट हो। क्या तुम्हें पता नहीं था कि आज टेस्ट होगा और इसमें प्राप्त अंक वार्षिक परीक्षा में जुड़ेंगे?'' ''सर, पता था इसीलिए मैं भाग कर आया हूँ।''

''इस तरह भागने का क्या लाभ मिला? बाहर बैठो।'' वह बाहर आकर बरामदे में रखें बेंच पर बैठ गया। उदासी उसके चेहरे को घेरे हुए थी। थोड़ी देर में वही सर उसके पास आए और बोले– ''तुम लेट क्यों हो गए थे?''

''सर, यह कहानी नहीं है वास्तविकता है। मैं घर से साइकिल पर चला था। सर, उसी साइकिल पर जिसे मेरे सब साथी चंद्रयान 3 कहते हैं। क्योंकि मैंने यह साइकिल उस दिन खरीदी थी, जिस दिन चंद्रयान 3 को चाँद पर भेजने की पहली खबर मिली थी। मैं समय पर घर से साइकिल पर ही चला था। मैं समझ गया था कि इसके टायरों में हवा कम है पर जल्दी स्कूल पहुँचने के लिए मैं हवा भरने वाली दुकान पर नहीं गया। सर, रास्ते में मुझे स्कूल के ही दो बच्चे मिल गए। उनको भी स्कूल जल्दी आना था। मैं उन्हें मना नहीं कर सका। वे भी मेरी साइकिल पर बैठ गये।''

''तुम मना क्यों नहीं कर सके?''

''सर, उनके नाम विक्रम और प्रज्ञान थे।''

''कहाँ है वे बच्चे?'' ''सर, वे अगली कक्षा में चले गए हैं। हुआ यह है कि रास्ते में हम तीनों के बोझ से साइकिल पंचर हो गई। वे दोनों तो भाग छूटे। शायद अपनी कक्षा में समय पर पहुँच गए। मैं तेज नहीं दौड़ सका। क्योंकि मेरे पास साइकिल थी।''

''यह बात तो मुझे वहाँ क्लास के दरवाजे पर खड़े होकर क्यों नहीं बताई?''

''सर, इसलिए कि मैं कहता कि मेरी साइकिल पंचर हो गई है तो मेरे साथी हँसते। हो सकता है उनमें से कोई कह देता इसका चंद्रयान दिन फेल हो गया। सर, चंद्रयान तो हमारा गौरव है। उसके लिए मैं यह कैसे सुन लेता?''

''ठीक है, काफी लम्बी हो गई तुम्हारी कहानी। जाओ, कमरे में बैठो और प्रश्नों के उत्तर लिखो। तुम्हें मैं पन्द्रह मिनट ज्यादा दूँगा। इसलिए कि चंद्रयान सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, हम सबका गौरव है।'' अब अजय की तेज चाल और खुशी देखने लायक थी।

गोविन्द शर्मा
संगरिया (राजस्थान)

चलते रहना अविराम

रुकना, मुड़ना, हार मानना, है कायर का काम
पथिक! चलते रहना अविराम।

लक्ष्य कठिन हो सकता लेकिन नामुमकिन कब होता?
पर्वत झुक जाते कदमों में धैर्य साथ जब होता।।
साहस पर कब लगा सका है कोई कभी लगाम।...

बहुत बड़ा हो सकता लेकिन सबसे बड़ा नहीं है।
माना लक्ष्य बड़ा है लेकिन तुझ से बड़ा नहीं है।।
लक्ष्य हो गया आज तुम्हारे जीवन का संग्राम।...

राहों में आती रहती हैं विपदा बिना बुलाए।
मन चाहा सामान मिला है किसको बैठ–बिठाए।।
विपदाओं को कुचल–मारकर करना काम तमाम।...

देर खुदा के घर हो सकती मगर अँधेर नहीं है।
मेहनत करने वाला रहता खाली हाथ कहीं है?
देर सवेर मिलेगा तुमको मेहनत का परिणाम।...

सत्यशील राम त्रिपाठी
गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)

आओ पढ़ें नई किताबें

गुलदार दगड़िया
मूल्य–160 रु.

जल की पुकार
मूल्य–285 रु.

स्वच्छता ही सेवा
मूल्य–265 रु.

लेखक इंजी. ललित शौर्य की तीन पुस्तकें प्राप्त हुई, जिनमें जंगल, जल और स्वच्छता विषयक बाल कहानियाँ प्रस्तुत हुई हैं। सभी कहानियाँ सरल, सहज एवं प्रेरक हैं। सुन्दर रंगीन आवरण की बहुरंगी अच्छे कागज पर मुद्रित बड़ी साइज की ये पुस्तकें बाल मन को लुभाती हैं। इनकी भाषा, शैली व कहानी की बुनावट बाल मनोविज्ञान को छूती है। उद्देश्य आधारित यह सृजन बाल साहित्य की निधि है। इनके प्रकाशक शौर्य पुस्तक संसार, मुवानी पिथौरागढ़ (उत्तराखंड) है।

पढ़ो और जीतो

यहाँ दिये दस प्रश्नों के उत्तर इसी अंक की सामग्री पर आधारित है। आप पत्रिका पढ़ें और उनके सही उत्तर खोजकर एक कागज पर लिखें। अपना नाम, कक्षा, शहर व मोबाइल नं. भी इस पत्र पर लिखना है । उसका फोटो हमें व्हाट्सएप नं. 9351552651 पर **दिनांक 29** फरवरी तक भेजें। सर्वश्रेष्ठ उत्तर पर पुरस्कार दिया जाएगा।

दिसम्बर का परिणाम : सिद्धा जैन, जोधपुर

1. संविधान की प्रस्तावना में कौनसे चार मूल्यों का जिक्र है?
2. पद्यकथा में दादाजी ने क्या कहा ?
3. गोपाल ने अपने भाइयों की मदद कैसे की ?
4. एकलव्य के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
5. सौरभ ने घर की शान्ति के लिए क्या किया ?
6. स्वामी श्रद्धानन्द का सबसे बड़ा योगदान क्या था ?
7. 'लीप ईयर' किसे कहते हैं?
8. किस व्यक्ति को देश का सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति माना जाता है ?
9. समृद्धि किस काम में माहिर है?
10. डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा का उद्देश्य क्या बताया?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) इन्डस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया IDBI (ब) नेशनल बैंक ऑफ एग्रीकल्चर एंड रूरल डवलपमेंट NABARD (स) सिक्योरिटिज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया SEBI (द) यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया UTI (2) वाशिंगटन (3) गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (4) 1950 (5) दस रुपये (6) महात्मा गांधी (7) भारत सरकार के वित्त सचिव के (8) इंडोनेशिया, मॉरीशस, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका (9) 500 और 1000 के नोट (10) निर्मला सीतारमण

अन्तर ढूँढ़िए

(1) फूल का रंग अलग (2) सूरज का आकार छोटा (3) लड़की का एक कान गायब (4) लड़के के टी–शर्ट का रंग अलग (5) एक पक्षी अतिरिक्त (6) बादल का आकार बड़ा (7) एक खिलौना (बतख) अतिरिक्त (8) पतंग गायब

दिमागी कसरत

(1) Brick (2) Cook (3) Milk (4) Key (5) Knee (6) Kidney (7) Kite (8) Knife

बूझो तो जानें

(1) बरसात (2) सर्दी (3) बसन्त (4) गर्मी (5) हेमन्त

अंकों की चित्र पहेली

आँख 9, सिर 7+1+1+2 =11, गर्दन 1+1+1+1+1+1= 6, पीठ 1+1=2, पेट 7+6+3+3=19 पूँछ 2+2=4, पैर 1+1 8+8 +1+8+8+1+1+8+7+8+8+1+1 = 70

कुल अंकों का योग 121 है।

वर्ग पहेली

1 सु	2 चा	3 ल	4 क		5 प्र	6 धा	7 न
8 अ	प	व	र्त	9 न		10 र	ज
व			11 व्य	य		12 क	र
13 स	14 फ	ल		15 न	16 ल		
17 र	ण		18 पा		गा		19 उ
		20 र	स		व		प
21 ब	22 सं	त		23 रा		24 क	हा
25 ल	ग	न		26 शि	ला	न्या	स

सुडोकू

9	5	7	6	1	3	2	8	4
4	8	3	2	5	7	1	9	6
6	1	2	8	4	9	5	3	7
1	7	8	3	6	4	9	5	2
5	2	4	9	7	1	3	6	8
3	6	9	5	2	8	7	4	1
8	4	5	7	9	2	6	1	3
2	9	1	4	3	6	8	7	5
7	3	6	1	8	5	4	2	9

प्रिशा चौपड़ा, कक्षा 9, ठाणे (महाराष्ट्र)

कीर्ति गोयल, कक्षा 6, सिलीगुड़ी

ओजस्वी, कक्षा 6, गौरीगंज

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 9, दिल्ली

यश, कक्षा 4, बीकानेर

दृष्टि, जूनियर के.जी., चित्तौड़गढ़

Swami Vivekanand was a great philosopher and spiritual leader who believed in the mantra of simple living and thinking. He was born in the year 1863 in a traditional Bengali family in Kolkata. Swami Vivekanand influenced the world with his discourse of modern vedanta and Raj Yoga at a very early age. He was a disciple of Shri Ramakrishna Paramhansa. His birthday is celebrated as National Youth Day in India. He gave a memorable speech in Chicago in 1893. He is the founder of Ramakrishna Mission.

Jayshankar, Class 6, Bikaner (Rajasthan)

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

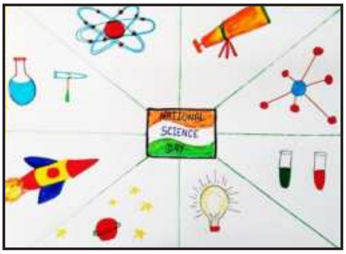

चिंटू

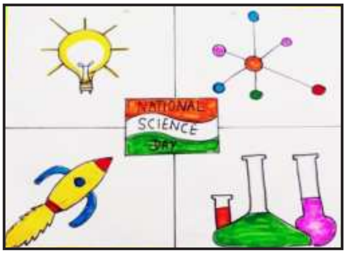

पूजा

आकांशा

कृष्णा

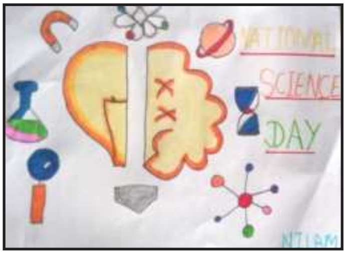

नीलम

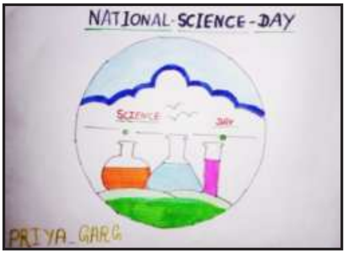

प्रिया गर्ग

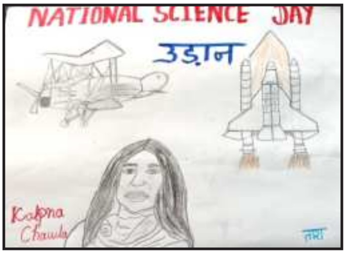

तारा

ज्ञान ही विज्ञान है

ज्ञान ही विज्ञान है
सोच से परे प्रकृति का परिमाण है
कम जानता है मनुष्य
फिर भी, ख़ोज हर महान है
छोटी हो बड़ी
जीत की पहचान है
मशीन में विज्ञान है
चिकित्सा भी विज्ञान है
यातायात में भी ज्ञान है
कृषि की पहचान है
नव युग का वरदान है
रक्षा और अनुसन्धान है
ज्ञान ही विज्ञान है

रजनी

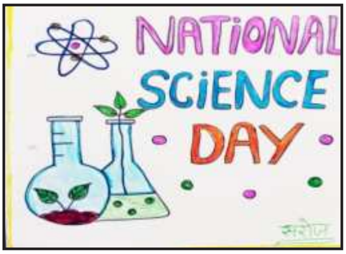

चिंटू

अनिता

सुमित्रा

: सामग्री सौजन्य :

आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- रोहट, पाली

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

गुजरात में सूर्य नमस्कार का विश्व रेकॉर्ड

नए साल के पहले दिन गुजरात में 108 अलग-अलग जगह चार हजार लोगों ने एक साथ सूर्य नमस्कार किया। यह आयोजन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में दर्ज हो गया। आयोजन स्थलों में मेहसाणा जिले का प्रतिष्ठित मोढेरा सूर्य मन्दिर शामिल है, जहाँ दो हजार लोगों ने सूर्य नमस्कार किया। इस प्रसंग पर प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि गुजरात ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के साथ 2024 का स्वागत किया। हमारी संस्कृति में 108 अंक का विशेष महत्त्व है।

भारत का सबसे लम्बा समुद्री पुल

मुम्बई ट्रांस हार्बर लिंक यानी अटल सेतु देश में समुद्र पर बना सबसे लम्बा पुल है। यह दक्षिण मुम्बई के शिवड़ी से शुरू होकर नवी मुम्बई के चिरले को जोड़ता है। 6 लेन का यह पुल प्रमुख एक्सप्रेस वे और अन्य गलियारों को जोड़ता है। यह ब्रिज 21.8 किमी लम्बा है। इसमें 16.5 किमी समुद्र और 5.5 किमी जमीन पर बना है। 2016 में इसका शिलान्यास हुआ। इस निर्माण पर 17,840 करोड़ रुपए की लागत आई। इसके निर्माण में 1.2 लाख टन स्टील लगा है। ट्रैफिक जानकारी के लिए 400 एडी कैमरे और एआइ आधारित सेंसर लगे हैं। प्रधानमन्त्री ने 12 जनवरी 2024 को इसका उद्घाटन किया।

101 क्विंटल अनाज से बनाई सीता-राम की कलाकृति

विवाह पंचमी श्रीराम व जानकी विवाह पर नेपाल के जनकपुरधाम में कलाकारों ने गेहूँ, चना, उड़द, मक्का व मूंग सहित 11 तरह के 101 क्विंटल अनाज से सीता राम की 121 फीट लम्बी और 915 फीट चौड़ी कलाकृति का निर्माण किया है। अनाज से कलाकृतियाँ बनाने के लिए मशहूर भारत के कलाकार सतीश गुर्जर के नेतृत्व में भारत नेपाल के कलाकारों ने 11000 वर्गफीट क्षेत्र में कलाकृति बनाई है।

7 वर्ष की आयु में स्केटिंग में 32 गोल्ड मेडल जीते

ग्रेटर नोएडा की रहने वाली समृद्धि ने साढ़े 3 साल की उम्र में स्केटिंग सीखना शुरू किया था। आज समृद्धि 2 बार की नेशनल चैम्पियन हैं। उन्होंने 32 से ज्यादा गोल्ड मेडल जीते हैं। वह चाहती हैं कि देश के लिए ओलिम्पिक में मेडल लेकर आएं। यूँ तो समृद्धि स्केटिंग में माहिर हैं। लेकिन वह बड़ी होकर जज बनना चाहती हैं।

पेड़ों के लिए स्वेटर

रंगीन ऊन या यार्न से बेहद खूबसूरती के साथ बुनकर ढके गए सड़क किनारे पेड़ों की कतार का यह चित्र है पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के कलंगुर्ली का। यह कला दरअसल यार्न बॉम्बिंग, यार्न स्टॉर्मिंग, गुरिल्ला निटिंग या अरबन निटिंग कहलाती है। इस कला के नमूने दुनियाभर में देखने को मिलते हैं।

सबसे लम्बे बालों का विश्व रिकॉर्ड

स्मिता श्रीवास्तव (46) उत्तरप्रदेश ने जीवित व्यक्तियों में सबसे लम्बे बालों का रेकॉर्ड बनाया है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉड्र्स के मुताबिक उनके बालों की लम्बाई 7 फीट 9 इंच है। स्मिता अपने बाल 14 वर्ष की उम्र से बढ़ा रही है।

Science of Living

Right Posture

Jeevan Vigyan

1. Which is the right standing posture?

To stand erect is the right posture to stand. Standing in right posture provides:

1. Energy to our body.
2. We feel less tired.
3. Proper shaping of the body.

Standing in wrong posture provides:

1. Laziness to our body.
2. We feel more tired.
3. Defects in body's shape.

2. Which is the right walking posture?

To walk erect with both our hands waving easily is the right walking posture. Walking in the right posture saves energy and shows awareness. Walking in wrong posture reduces energy and shows carelessness.

3. Which is the right sitting posture?

To sit with our back and neck straight is the right sitting posture. It provides:

1. Briskness.
2. Less tiredness.
3. Proper shaping of the body.
4. Proper flow of vital energy.

To sit with the back and neck bent or curved is the wrong posture. It provides:

1. **Laziness to our body**
2. **More tiredness**
3. **Defects in body's shape.**
4. **Disruption in the flow of vital energy.**

4. How to lie down while sleeping?

To lie down in right posture leads to complete relaxation, peacefulness, sound sleep and helps regain full energy.

To lie-down in wrong posture does not lead to complete relaxation, peacefulness and sleep.

प्रेरक प्रसंग

एक रुपया

एक बार बंगाल में भीषण अकाल पड़ा। लोग भूख से व्याकुल हो उठे। अन्न के दाने–दाने के लिए तरसने लगे। एक दिन कोई पतला–दुबला लड़का ईश्वरचंद्र विद्यासागर के पास आया। वह बर्दवान का रहने वाला था। उसने उनसे दो पैसे माँगे। बालक का मुँह भूख से पीला पड़ गया था, किन्तु आत्मविश्वास चेहरे पर विद्यमान थे।

''मान लो मैं तुम्हें चार पैसे दूँ तो?'' –विद्यासागर ने पूछा। ''कृपया मजाक न करें। मैं पहले ही बहुत परेशान हूँ।'' –बालक ने कहा। ''यह मजाक नहीं है। बताओ, चार पैसे का क्या करोगे?'' विद्यासागर ने पूछा। ''दो पैसे से खाने की कुछ चीज खरीदूँगा। दो पैसे अपनी माँ को दे दूँगा।'' – लड़का बोला। ''और अगर तुम्हें दो आने दूँ तो?'' –विद्यासागर ने फिर कहा। लड़के ने अपना मुँह फेर लिया। वह चलने लगा, तो विद्यासागर ने बढ़कर उसकी बाँह पकड़ ली और बोले– ''बुरा न मानो, मेरी बात का जवाब दो।''

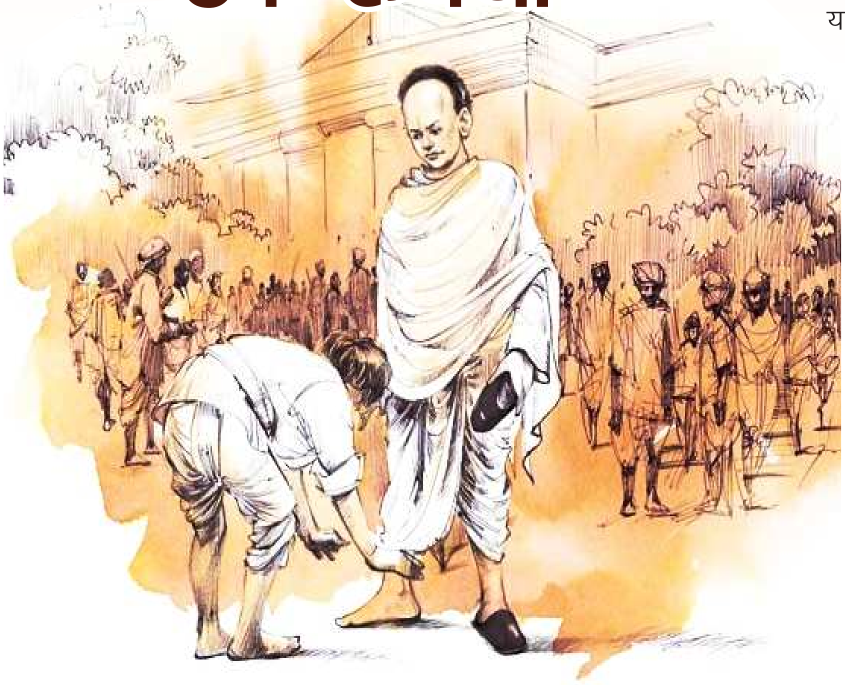

बालक की आँखों में आँसू आ गए। वह धीरे–से बोला– ''चार पैसे का मैं भोजन या खाने की कोई चीज खरीदूँगा, बाकी पैसे माँ को दे दूँगा।'' ''चार आने दूँ तो?'' उन्होंने पुनः पूछा। ''दो आने का दो दिन भोजन करूँगा। फिर दो आने के आम खरीदूँगा। उन्हें चार आने में बेचकर अपने व अपनी माँ के जीवन की रक्षा करूँगा।'' –लड़के ने कहा, उसकी बातों में दृढ़ता झलक रही थी। विद्यासागर उस लड़के की बातों से बहुत प्रभावित हुए। उसे एक रुपया दे दिया। रुपया पाकर लड़के का चेहरा खुशी से खिल उठा। वह दौड़कर आँखों से ओझल हो गया।

तीन वर्ष बाद विद्यासागर बर्दवान गए। वह बाजार में जा रहे थे। तभी एक छोटी–सी दुकान में से एक किशोर बाहर आया। उसने विद्यासागर को झुककर नमस्कार किया। फिर आग्रह करते हुए कहा– ''श्रीमान, क्या आप मेरी दुकान पर पधारने की कृपा करेंगे?'' ''मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।'' विद्यासागर ने कहा।

लड़के की आँखें गीली हो गईं। उसने तीन वर्ष पहले की घटना विद्यासागर को याद दिलाई। कहा– ''मैंने आपके दिए रुपए से काम शुरू किया। सुबह–शाम फेरी लगाई। धीरे–धीरे आमदनी बढ़ती गई। उसी आमदनी से यह छोटी–सी दुकान खोल ली। मैं तथा मेरी माँ आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमें गरीबी से मुक्ति दिलाई।''

उस लड़के की मेहनत से विद्यासागर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। वह बड़ी देर तक लड़के की दुकान पर बैठे बातें करते रहे। विद्यासागर जी की उदारता की बात जिसने भी सुनी चकित रह गया।

विमला रस्तोगी 'आयाम'
दिल्ली

इन्तजार क्यों ?

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

देखो, लिखो और सीखो

प्रस्तुत चित्र पहेली में बने आठ चित्रों के नाम जहाँ हिन्दी में लिखे हैं उनको रिक्त स्थान पर अंग्रेजी में और जहाँ अंग्रेजी में लिखा है उन्हें हिन्दी में लिखकर दिखाना है...

– राकेश शर्मा 'राजदीप' उदयपुर

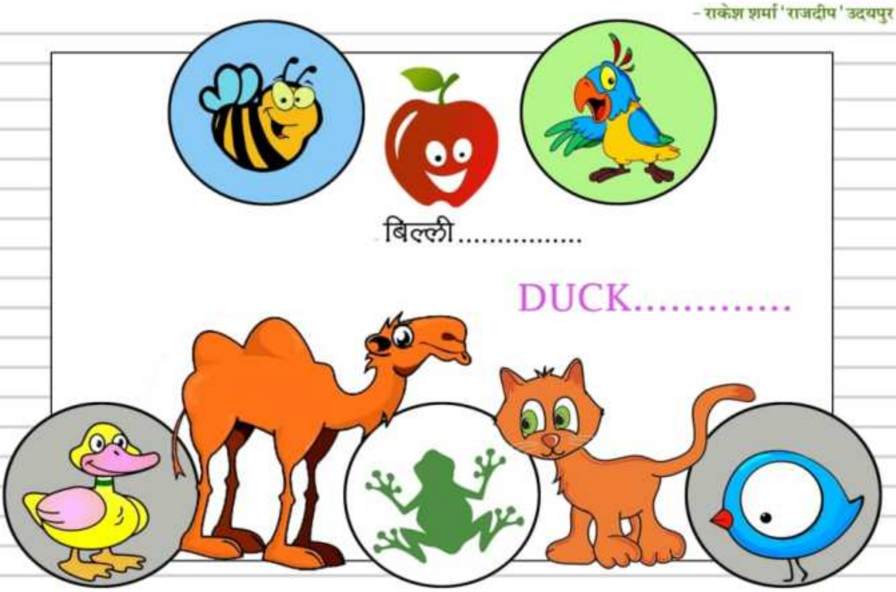

चिड़िया............... तोता........................ मधु मक्खी...........................

APPLE........FROG............CAMEL..........

जन्मदिन की बधाई

02 फरवरी	17 फरवरी	17 फरवरी
ओजस्वी गौरीगंज	आरोही माहेश्वरी चित्तौड़गढ़	जैनिका मारू भीलवाड़ा

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai • Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव
सम्पूर्ति समारोह

10, 11 व 12 मार्च, 2024

पावन सन्निधि
अणुव्रत अनुशास्ता
आचार्य श्री महाश्रमण

आयोजन स्थल
महाड़ - लोणेर (जिला - रायगढ़, महाराष्ट्र)

आयोजक
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

सम्पर्क सूत्र : 9422 416999, 98223 03836, 74101 59834, 98692 73412

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

"शिक्षा का उद्देश्य बालक के शरीर, मन और इन्द्रिय तीनों का सन्तुलित विकास करना है।

शिक्षा के द्वारा ऐसे विद्यार्थी का निर्माण हो जो स्वार्थी न हो अर्थात् अपना ही विकास न करें बल्कि समाज की सेवा के लिए अपना जीवन अर्पित कर सकें।"

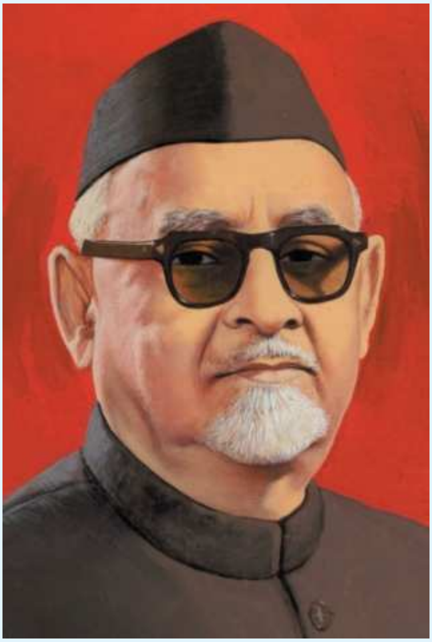

डॉ. जाकिर हुसैन

जन्म : 08 फरवरी 1897

निधन : 03 मई 1969

आप हैदराबाद में जन्मे स्वतन्त्रता सेनानी, भारत के दूसरे उप राष्ट्रपति व तीसरे राष्ट्रपति तथा प्रमुख शिक्षाविद् थे। उन्होंने जर्मनी के बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पीएच डी की उपाधि प्राप्त की और जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के उप कुलपति के पद पर आसीन हुए। वे अलीगढ़ विश्वविद्यालय के भी उपकुलपति बने तथा उनकी अध्यक्षता में 'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' भी गठित किया गया। इसके अलावा वे भारतीय प्रेस आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, यूनेस्को, अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा सेवा तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से भी जुड़े रहे। उन्हें वर्ष 1963 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।